श्री जगदीश धाम-कैमरी

(धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्र)

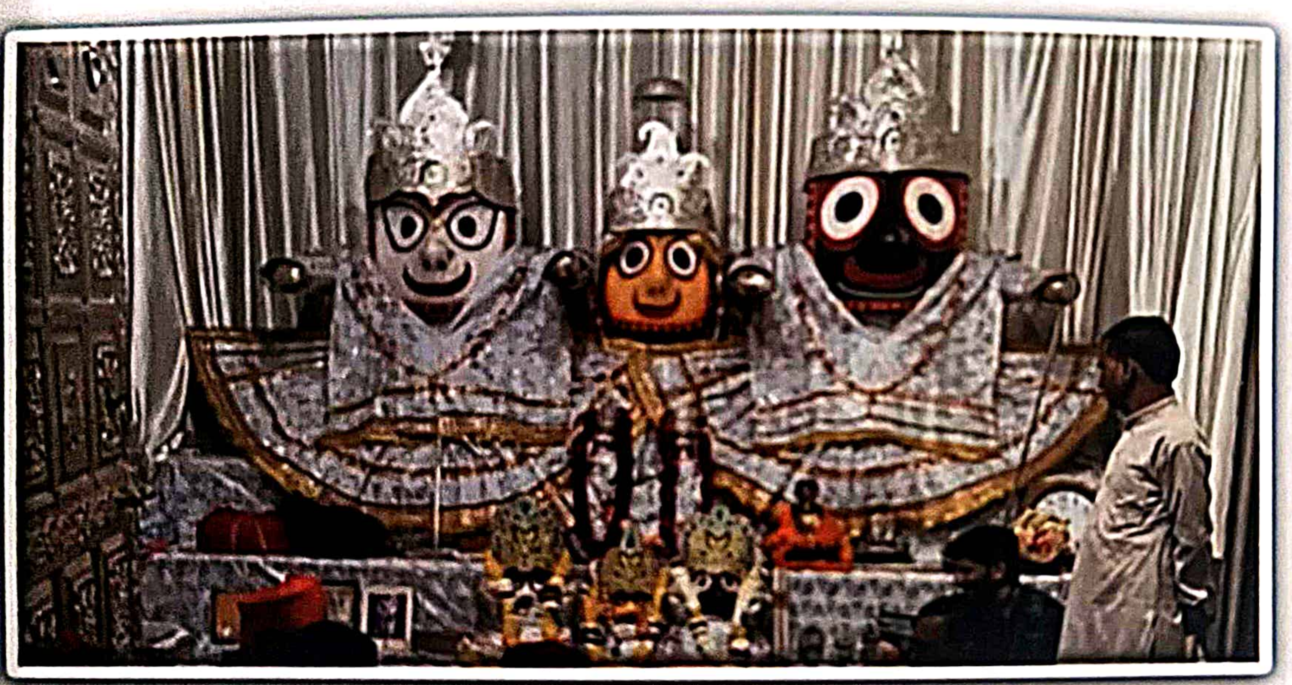

श्री जगदीश धाम कैमरी गर्भग्रह दर्शन

-:: लेखक ::-

श्री हरदयाल योगी

एम.ए. (इतिहास, अंग्रेजी) B.Ed.

वीरेंद्र सिंह, व्याख्याता

NET-JRF, Ph.D Scholar (ढण्ड का पुरा, कैमरी)

-:: मार्गदर्शक ::-

श्री नादान सिंह खटाना

(बाढ़ कैमरी)

उपनिदेशक, राज. स्कूल शिक्षा परिषद्, जयपुर

डॉ. ज्ञान सिंह झाड़ीसा

आयुर्वेद चिकित्सक

श्री शीशराम खटाना

गाँव कैमरी

लेखक की कलम से...

सम्मानीय पाठक बन्धुओं,

हम सर्वप्रथम प्रथम पूज्यबुद्धिदाता, विघ्नहर्ता श्री गणेश जी, समस्त विद्याओं की देवी माँ सरस्वती, माँ पार्वती सहित गुरुओं के गुरु भगवान शंकर और जगन्नाथ स्वरूप में विराजमान बलदाऊ, बहिन सुभद्रा सहित योगेश्वर श्रीकृष्ण के चरणों में कोटि कोटिनमन करते है, जिनकी असीम कृपा से हमें परम पावनी राजस्थान की जगन्नाथपुरी जगदीश धाम कैमरी, जगदीश भगवान का साक्षात्कार कर इस पावन धरा पर जगन्नाथ भगवान को लाने वाले भक्त शिरोमणि श्री चंद्रमादास जी, यहाँ के पावन धार्मिक स्थल, संत महात्मा, देव तुल्य यहाँ के निवासी, देश भक्त सैनिक, यहाँ की धार्मिक, सांस्कृतिक परंपराएँ प्राकृतिक सौंदर्य, यहाँ के त्यौहार, रीतिरिवाज, ब्रज जैसी होली, गोवर्धन पूजा, रास लीला, इस पवित्र धाम के केर कुंज, श्री राधारानी का कुंड, गौ कुंड, फतेहसागर बांध का पावन वर्णन करने की प्रेरणा मिली।

धन्य हैं वे जन जिन्होंने इस पावन नगरी अजय खेड़ा जगदीश धाम कैमरी में जन्म लिया। यह ऐसी पावन नगरी है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण स्वयं तीन बार पधारे, जिस पावन नगरी से भगवान का बहुत पुराना नाता रहा है, जहाँ भगवान कृष्ण गो लोक जाने के बाद स्वयं चलकर आए और यहाँ वर्तमान में श्री जगन्नाथ जी के रूप में भाई बलदाऊ, बहिन सुभद्रा सहित विराजमान हैं।

ऐसा भव्य, नव्य और दिव्य श्री जगदीश भगवान का मंदिर पुरी को छोड़कर सम्पूर्ण भारत वर्ष में कहीं नहीं हैं। हरि इच्छा बलवान है, उन्हीं की प्रेरणा से हम इस परम पावन नगरी का वर्णन कर पा रहे हैं, वरन हम जैसे सामान्य मनुष्यों की विसात ही क्या है जो हम भगवान के गुणों का वर्णन कर सकें। प्रबुद्धजनों से निवेदन है कि जैसे हरि अनंत हैं और हरी कथा भी अनंत है, वैसे ही हरि धाम का वर्णन करना भी बड़ा कठिन कार्य है, इसलिए त्रुटि होना स्वाभाविक है।

इस पावन ग्रंथ को लिखने में महाभारत, विभिन्न पुराणों, प्राचीन और नवीन देश, विदेश के लेखकों, प्राचीन वंशावलियों, जागा की पोथियों आदि की सहायता ली गई। इसे लिखने में यहाँ के बड़े बुजुर्गों, संत महात्माओं, श्री जगदीश धाम कमेटी सदस्यों, यहाँ के समाज सेवियों सभी का हमें पूर्ण सहयोग मिला जिनके भी हम आभारी हैं।

प्रस्तुत लेख में जनसमुदाय की धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर रखने का अद्वितीय प्रयास, आर्य संस्कृति को जीवंत रखने के लिए प्रचलित परम्पराएँ, क्षेत्रीय विरासत की विशेषताओं को वैश्विक धरातल पर लाने का प्रयास है। क्षेत्र में प्रचलित रोजमर्रा की जिंदगी, वर्षभर हिंदू त्योहारों में ब्रज संस्कृति की झलक, मूल आर्य लोगों से मेल खाती जीवन शैली भगवान श्री कृष्ण से असीम नाता होने के प्रमाण प्रस्तुत करती है। ग्रामीण परिवेश में बसे सैंकडों लोगों की कहावतों, बातों, पहेलियों से ये प्रमाण पुख्ता होने का साक्ष्य है। लोगों का मानना है कि निरक्षर होने के कारण हम अपना इतिहास नहीं लिख सके इसलिए हजारों वर्षों से हम इन कहानियों को पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक संचार करते आए है।

प्रस्तुत लेख में लेखक वीरेंद्र सिंह व्याख्याता, इतिहासकार, NET-JRF, Ph.D Scholar (ढण्ड का पुरा, कैमरी) हंसराज अध्यापक, समाजवेत्ता (पूर्व सरपंच, जिंदो का पुरा कैमरी) एवं हरदयाल योगी वरिष्ठ अध्यापक, इतिहासकार (बस स्टैण्ड, कैमरी) ने श्री नादान सिंह खटाना (Deputy director, education department, बाढ़ कैमरी), श्री शीशराम खटाना, (पुल की ढाणी, कैमरी) PCC सदस्य, डा. रूपसिंह गुर्जर (भिवाड़ी), डा. सुशील भाटी एसोसिएट प्रोफेसर, उत्तराखंड के कुशल मार्गदर्शन लिखा गया।

विशेष सहयोग - श्री रामकेश खटाना, अक्ष ई-मित्र, कैमरी एवं श्री नयन सुख खटाना, कनिष्ठ सहायक, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, करौली।

हम इस पुस्तक के लेखन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग/मार्गदर्शन देने वाले महानुभावों का हदय से आभार व्यक्त करते है।

लेखकगण

विवरणिका

क्रम	विवरण
(क)	(1) श्री जगदीश धाम कैमरी का भौगोलिक परिचय
(ख)	(2) भगवान श्री कृष्ण से असीम नाता • शिक्षा ग्रहण करते समय का विवरण • पौराणिक नगरी गढ़मोरा में भगवान श्री कृष्ण की राजा मोरध्वज की परीक्षा • किंजर की गुफा एवं जामवंती विवाह (3) श्री चंद्रमादास की कठिन दण्डवत यात्रा और भगवान का कैमरी आगमन (4) चमत्कार एवं आस्था (5) ब्रजवासी ग्वाल-बाल और वंशानुक्रम सारणी (6) श्री जगदीश धाम मंदिर ट्रस्ट पदाधिकारियों का नाम एवं कार्यग्रहण (7) बसंत पंचमी मेला एवं रथ यात्रा (8) अन्य प्रमुख धार्मिक स्थल (9) नवकलेवर (10) अटका चढ़ाना (11) भाद्रभोज (12) सामूहिक भोज

(ग)	(13) सांस्कृतिक विरासतः-रीति-रिवाज एवं परम्पराऐं • लोकगीत • रणनृत्य • गोठ • रसिया • कीर्तन दंगल • अंकमाला • पहनावा • स्वागत बेला
(घ)	(14) उत्सव और त्यौहार • पितृतर्पण • गोवर्धन पूजा और गोधन गीत • ब्रज की होली/डोलची/रंधूकड़ी • जन्माष्टमी एवं झांकी दर्शन
(च)	(15) कृषि/पशुपालन/खाद्यान्न
(छ)	(16) राष्ट्र सेवा में क्षेत्रवासियों का योगदान
(ज)	श्री जगदीश धाम मंदिर के प्रस्तावित आधारभूत कार्य
(झ)	संदर्भ सूची

श्री जगदीश धाम-कैमरी

(धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्र)

श्री जगदीश धाम कैमरी गर्भग्रह दर्शन

भौगोलिक स्थिति

श्री जगदीश धाम कैमरी राजस्थान के करौली जिले की नादौती तहसील में एक धार्मिक पर्यटन स्थल है, जो कि राजनैतिक रूप से नौ ग्राम पंचायतों में बसा एक क्षेत्र है, अधिकांशतः एक ही समुदाय के लोग रहते हैं, जिनकी सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक मान्यताऐं समान हैं।

जिसकी अंक्षाशीय स्थिति 25''40 डिग्री उत्तर से 25''50 डिग्री उत्तर व देशातंर स्थिति 77''01 डिग्री पूर्व हैं। भारत की राजधानी

दिल्ली से 300 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में, राजस्थान की राजधानी जयपुर मुख्यालय से 125 किलोमीटर से पूर्व में, गंगापुर सिटी रेलवे स्टेशन से 35 किलोमीटर, विश्व स्तरीय धार्मिक स्थल ''श्री महावीरजी'' से मात्र 20किलोमीटर दूरी पर स्थित हैं। फतेह सागर बांध के किनारे स्थित भव्य मंदिर प्रांगण के साथ-साथ अनेक खूबियों के लिए जाना जाता हैं।

जगदीश धाम से कृष्ण का नाता

हाल ही में राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री माननीय भजनलाल शर्मा एवं मध्यप्रदेश सरकार ने पर्यटन और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भगवान श्री कृष्ण, बलराम और सुदामा सहित ग्वाल-बाल शिक्षा प्राप्त करने मथुरा से संदीपनी आश्रम उज्जैन जिस मार्ग से गुजरे उस मार्ग को पर्यटन सर्किट के रूप में विकसित करने की घोषणा की। इस पर्यटन सर्किट में श्री गोवर्धन- श्री कृष्ण ने गोवर्धन पूजा की, बयाना-बाणासुर के यहाँ 'श्रोणितपुर' (वर्तमान बयाना) में विश्राम, कैमरी-गाय व ग्वाल बालों का त्याग किया। (राधा कुंड बनवाया था।) करौली- यहाँ से चम्बल के बीहड़ो की राह पकड़ते हुए, सवाई माधोपुर- यज्ञ के लिए कुंड बनवाया था, मथुराधीश कोटा- यहाँ संगीत का ज्ञान प्राप्त किया, पाटन-यहाँ पांडवों ने अज्ञातवास काटा था, उज्जैन- यहाँ श्री कृष्ण ने गुरु संदीपन के आश्रम पर 14 विद्याऐं

और 64 कलाएं सीखी थी, भगवान ने इस स्थान पर गोमती कुंड का निर्माण करवाया था।

राजस्थान सरकार के वर्तमान मुख्यमंत्री माननीय श्री भजन लाल शर्मा, गृह राज्य मंत्री माननीय जवाहर सिंह बेढ़म, राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री ओंकार सिंह लखावत ने श्री जगदीश धाम कैमरी के ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए श्री कृष्ण गमन-पथ सर्किट में शामिल करने की घोषणा 2 फरवरी 2025 को की।

हिन्दू धर्म संस्कृति में तथा उपनिषदों, पुराणों व धर्मग्रन्थों में बताया गया हैं कि **"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मनम् सृजाम्यहं। परित्रणाय साधून् विनाशाय च दृष्कृताम्, धर्मसंस्थापनार्थाय संभावामि युगे-युगे।"** जब-जब इस धरा पर धर्म की हानि होती हैं, अधर्म बढ़ता हैं, तब-तब धर्म की स्थापना के लिए कोई नाकोई प्रभू की शक्ति मनुष्य रूप में अवतरित होती हैं। हर युग में किसी न किसी महापुरुष का अवतार हुआ हैं। ऐसा ही द्वापर युग में हुआ जब कंस राक्षस का पापाचार अधिक बढ़ गया था, लोग त्राही-त्राही करने लगे और सभी राक्षसों व पापियों का नाश करने के लिए भगवान श्री कृष्ण ने देवकी के माध्यम से अवतार लिया तथा उनका लालन-पालन माता यशोदा व नन्द बाबा के यहाँ हुआ। बाल्यकाल से भगवान श्री कृष्ण बाल

लीलाएँ करने लगे। उनकी लीलाओं ने आमजन का मन मोह लिया। ग्वाल बालों के साथ गायें चराना व बाल क्रीडा करना उनका नित्य कर्म बन गया था। बाल्यावस्था से ही राक्षसों का नाश करने लगे।

भगवान श्री कृष्ण की शिक्षा प्राप्ति हेतु संदीपन आश्रम की यात्रा

आज से लगभग 5000 हजार वर्ष पहले शस्त्र-शास्त्र शिक्षा के लिए नन्द बाबा व यशोदा माँ ने संदीपन ऋषि के आश्रम उज्जैन में भेज दिया था, वहाँ इन्होंने 64 दिनों में ही 64 कलाओं की शिक्षा प्राप्त कर ली थी। ऐसा लेख व प्रमाण भी मिलता हैं कि जब भगवान श्री कृष्ण उस समय संदीपन ऋषि के आश्रम के लिए गये तब उनके साथ बृज के ग्वाल बाल (बचपन के साथी व ब्रजवासी) भी साथ थे, जिनमें ब्रज के गाँव पान्होरी के भी कुछ ग्वाल बाल साथ थे, ये मथुरा से झीलकाबाडा भरतपुर होते हुए चलते-चलते जब रात्रि विश्राम करने की आवश्यकता हुई तो एक बहुत ही सुरम्य कैर का जंगल (वर्तमान कैमरी गाँव) था जो उन्हें रुकने के लिए पसंद आया और एक रात्रि विश्राम किया।

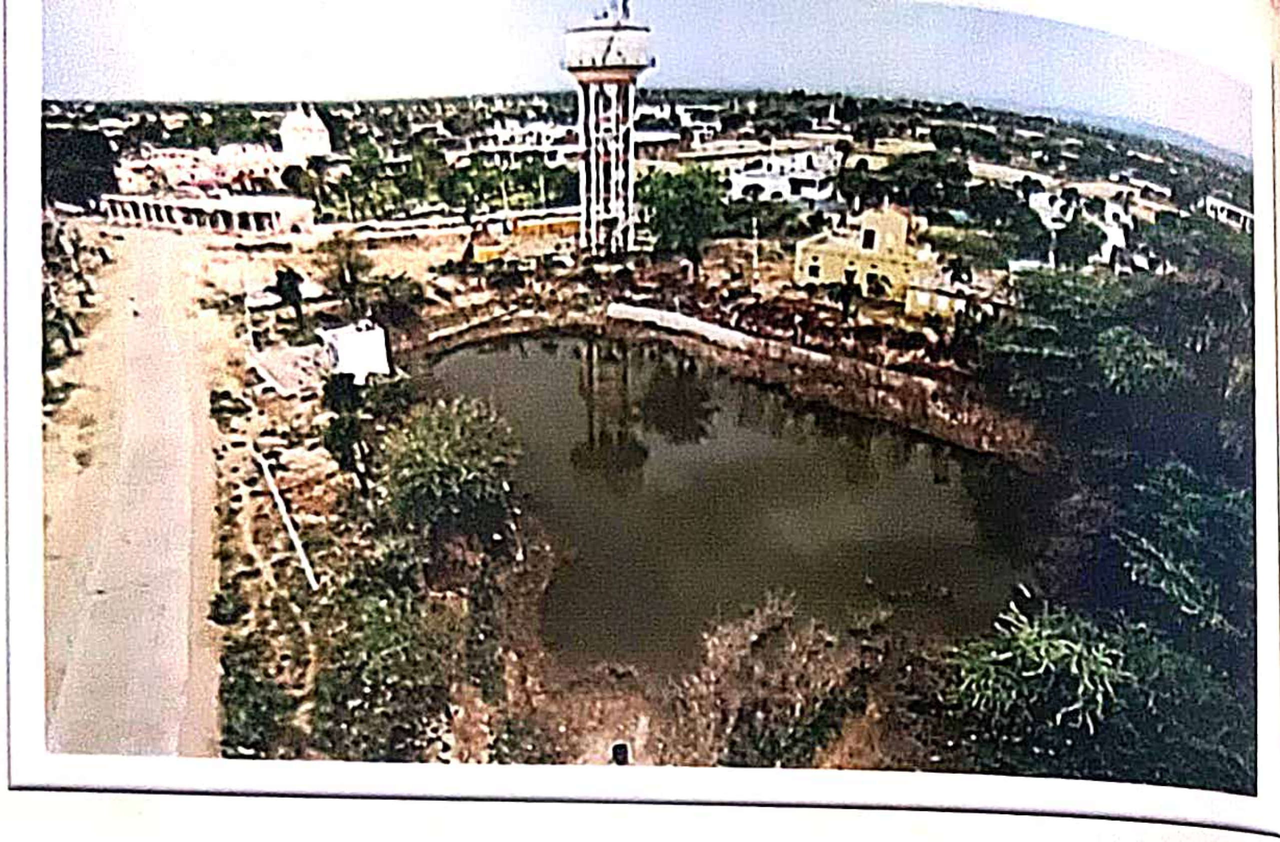

श्री जगदीश धाम मंदिर के बाई ओर समीप में बना राधा कुण्ड

रात्रि विश्राम के पश्चात् अगले दिन गंतव्य स्थान के लिए रवाना होते समय भगवान श्री कृष्ण ने साथियों से कहा था कि यह बहुत मनमोहक स्थान हैं। मैं समय-समय पर लीला करने इस पवित्र स्थान पर आया करूंगा। ऐसा कहकर भगवान श्री कृष्ण अपने सखा बलदाऊ जी के साथ संदीपनी आश्रम के लिए रवाना हो गए एवं उनके कुछ बाल सखा उसी स्थान पर रुक गए यहाँ दो पानी के कुण्ड बने हुए थे जिनमें एक का नाम गऊकुण्ड एवं दूसरे का नाम राधाकुण्ड उसी समय दिया गया। ये दोनों कुण्ड आज भी इसी नाम से विध्यमान हैं। जिनका वर्णन जागा की पोथी में भी मिलता है। गऊकुण्ड व राधाकुण्ड तभी के बताये जाते हैं। इसके बाद पान्होरी के ग्वाल बाल जो भगवान श्री कृष्ण के साथ यहाँ आए। इनमें से कुछ यही पर बस

गए एवं कुछ वापस चले गए। यहाँ केर (करील) के पेड़ों की बहुतायत थी। यह स्थान केर वन के नाम से प्रसिद्ध था जो कालांतर में कैमरी के नाम से जाना जाने लगा।

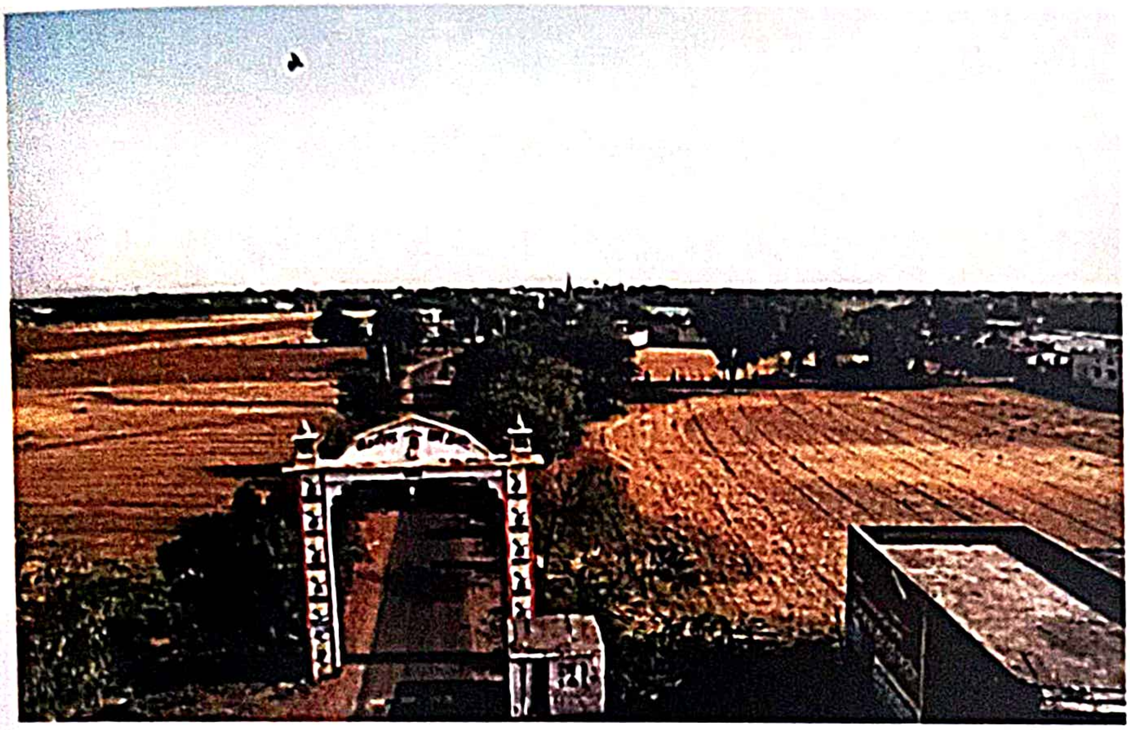

मुख्य द्वार, बस स्टेण्ड, श्री जगदीश धाम कैमरी (मंदिर से दूरी 1.25 किमी)

राजा मोरध्वज की परीक्षा

स्थानीय किंवदंतियों और मान्यताओं के अनुसार एवं महाभारत के अश्वमेघपर्व के अनुसार महाभारत युद्ध के बाद भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन के घमंड को तोड़ने के लिए अपने एक शिष्य, दानी राजा मोरध्वज की परीक्षा लेने की ठानी। साधु का भेष बनाकर भगवान श्री कृष्ण और अर्जुन माया रूपी सिंह को लेकर राजा मोरध्वज के दरबार पहुँचते है। राजा के स्वागत सत्कार के बाद भोजन के लिए आमंत्रित

किया तो साधुओं ने राजा से वचन लिया कि हम भोजन जब करेंगे जब आप अपने बेटे का माँस हमारे भूखे शेर को खिला सको और आँखों से आँसू तक नहीं निकलें। राजा ने अपनी पत्नी पद्मावती को भोजन बनाने का आदेश दिया। राजा मोरध्वज एवं उनकी रानी ने अपने कलेजे पर पत्थर रख कर अपना धर्म निभाया एवं अपने बेटे रतन कंवर की कुर्बानी दी, भगवान श्री कृष्ण राजा मोरध्वज पर अत्यंत प्रसन्न हुए और उनके बेटे रतन कंवर को जीवनदान दिया। राजा मोरध्वज एवं उनकी रानी को भगवान श्री कृष्ण के साक्षात दर्शन हुए इसी लीला के बाद क्षेत्र को मायानगरी का वरदान मिला हुआ है। गढमोरा से थोडी दूरी पर कैर के जंगलों में जो कि उस समय राजा मोरध्वज के क्षेत्र में आता था, यहाँ थोडी दूरी पर डूंगापुरा मोरडा के पास राज मोरध्वज की अंतिम गढी भी बनी हुई है, जो कि वर्तमान में खंडहर स्थिति में मौजूद है। इसी कैर के जंगल में भगवान श्री कृष्ण, अर्जुन और मायावी सिंह ने विश्राम किया, इस क्षेत्र को आज ''**सिंहनवाडी**'' के नाम से जाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि जब भगवान श्री कृष्ण अर्जुन के साथ राजा मोरध्वज की परीक्षा लेने गढ़मोरा आए थे तो रास्ते में कैमरी गाँव में राधा कुण्ड पर कुछ समय के लिए विश्राम किया।

श्री कृष्ण-जाम्बवती विवाह

श्री जगदीश धाम कैमरी के उत्तर दिशा में मात्र आठ किलोमीटर दूरी पर जांबवान गुफा स्थित है जिसे वर्तमान में कींजर की गुफा कहा जाता है। यह गुफा मोरडा गाँव समीप भंडारी गाँव के पहाड़ी क्षेत्र में मौजूद है। पहाड़ के ऊपर यह लगभग 45 किमी. लंबी पहाड़ों को काटकर बनाई गई प्राकृतिक गुफा है, जिसके सात दरवाजे भूल भुलैया वाले हैं। वर्तमान में इस गुफा में 100 मीटर की लंबाई को छोड़कर पहाड़ों के ऊपर पानी भरा हुआ है। माना जाता है कि इस गुफा का विस्तार आड़ी-पदमपुरा तक है। इस गुफा के दक्षिण द्वार पर श्रीकृष्ण का पद चिह्न (चरण चिन्ह) बना हुआ है। जिसमें भी पानी मौजूद है।

कींजर की गुफा में प्राकृतिक बना हुआ श्रीकृष्ण का पद चिन्ह

यहाँ महाभारत कालीन, बौद्ध कालीन, गुप्त कालीन मूर्तियाँ एवं प्राचीन शिव मंदिर के अवशेष मौजूद हैं।श्री मद्भागवत पुराण के दशम स्कंध के ४५ वें अध्याय में भगवान श्री कृष्ण जांबवान का मल्ल युद्ध एवं जाम्बवती विवाह का वर्णन मिलता है। आज से

लगभग 5500 वर्ष पूर्व इस भारत देश की पवित्र भूमि पर श्री कृष्ण का सोलह कलाओं युक्त अवतरण हुआ था।

महाभारत,पुराणों एवं उपाख्यानों के अनुसार अवंतिका (उज्जैन) नगरी का राजा सत्राजित था, जो सत्यभामा जी का पिता था। वह यादव राजा था, उसे द्वारका नगरी का कोषाध्यक्ष चुन लिया गया। राजा सत्राजित के पास एक स्यामंतक मणि थी जो उसे सूर्य नारायण ने भक्ति से प्रसन्न हो कर प्रदान की थी। यह मणि हर रोज 20 तोला सोना देती थी। एक दिन सत्राजित इस मणि को धारण कर द्वारका नगरी में आया। मणि का प्रकाश सूर्य किरण के समान दैदिप्तमान हो रहा था। प्रकाशित मणि को देखकर सभी दरबारी रोमांचित हो गए और कहा कि यह मणि श्री कृष्ण के पास ही सुरक्षित रहेगी और इससे द्वारका नगरी की शोभा भी बढ़ेगी, परंतु सत्राजित इसे देने को राजी नहीं हुए। समय गुजरता गया। एक दिन सत्राजित का छोटा भाई प्रसेजित अपनी पगड़ी में स्यामांतक मणि को धारण कर घोड़े पर सवार होकर शिकार खेलने के लिए गया। घनघोर जंगल में जाने पर एक शेर ने पीछे से घात लगाकर आक्रमण कर दिया और घोड़ा सहित प्रसेजित को मार डाला। शेर प्रसेनजीत को मारकर। जाते समय अपने मुंह में मणि को दबाकर पहाड़ों की कंदराओं के बीच स्थित जांबवान की गुफा में प्रवेश कर गया। जांबवान ने शेर को मारकर वह स्यामन्तक मणि अपने पास रख ली। उस मणिको अपनी पुत्री जामबंती

को दे दिया। जब प्रसेनजीत शिकार करके वापिस नहीं लौटा, तो सम्पूर्ण भारत वर्ष में एक ही चर्चा होने लगी कि किसी के द्वारा मणि के चक्कर में प्रसेनजीत की हत्या कर दी गई है। इस हत्या और मणि चोरी का आरोप श्री कृष्ण पर लगा। भगवान श्री कृष्ण, बलराम जी एवं अन्य यादव वीर बड़े दुखी हुए।

श्री कृष्ण सत्राजित, बलदाऊ एवम् अन्य यादव वीरों को लेकर सत्य का पता लगाने एवं मणि की खोज में निकले। जब वे धोकड़ा वन क्षेत्र में आए तो उन्हें जांबवान गुफा के समीप प्रसेनजीत के खून से सने हुए कपड़े एवं घोड़े की हड्डियाँ आदि मिले। साथ ही शेर के पग मार्क भी गुफा की तरफ जाते हुए मिले। भगवान श्री कृष्ण साथियों को लेकर शेर के पग मार्कों का पीछा करते हुए गुफा के दरवाजे तक आ गये। उन्होंने सत्राजित एवं अन्य यादव वीरों को गुफा के बाहर ही छोड़ दिया और स्वयं गुफा के अंदर प्रवेश कर गए। ज्योंहि श्री कृष्ण ने गुफा के अंदर प्रवेश किया तो अंधेरी गुफा के अंदर सूर्य के समान तेज प्रकाश देखा और वे उस प्रकाश की दिशा में आगे बढ़ गए। उन्होंने देखा कि एक कन्या मणि को हाथ में लेकर खेल रही है। भगवान श्री कृष्ण ने कन्या से मणि देने को कहा। इस पर कन्या एक असाधारण पुरुष देखकर अपने पिता को पुकारने लगी। कन्या की चीख पुकार सुनकर जांबवान बाहर आया। उसने श्री कृष्ण को युद्ध के लिए ललकारा। दोनों में द्वंद्व युद्ध होने लगा।

हरिवंश पुराण और महाभारत के अनुसार यह युद्ध 27 दिन तक चला। जांबवान बुरी तरह घायल हो गया। 28 वे दिन जम्बवान को आभास हुआ कि मुझे श्री राम के अलावा कोई भी नहीं हरा सकता है। थके, हारे जांबवान ने कहा, हे वीर पुरुष! आप कोई और नहीं स्वयं विष्णु भगवान है क्योंकि मुझे वरदान है कि मैं श्री राम के अलावा किसी से नहीं हार सकता। आप मुझे अपना असली रूप बताइए। तब श्री कृष्ण ने कहा हे जांबवान मैं ही नारायण अवतार राम हूँ, जो द्वापुर युग में कृष्ण के रूप में अवतरित हुआ हूँ। जम्बवान बोला, भगवान मैं मेरी हार स्वीकार करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे जानकी माता सहित अपने श्री राम रूप के दर्शन कराइये। भगवान श्री कृष्ण ने जांबवान को सीता माता सहितश्री राम रूप के दर्शन कराए। यह देखकर जाम्बवान ने कहा, प्रभु! आज में कृतार्थ हो गया, मेरी जन्म जन्म की प्यास बुझ गई। परंतु मेरी एक इच्छा है कि मैं अपनी प्यारी पुत्री जम्बवती आपको सौंपना चाहता हूँ, जैसे राजा जनकजी ने अपनी पुत्री जानकी आपकी सौंपी थी।

श्री कृष्ण ने कहा ''**एवंस्तु**'' वचनानुसार जांबवान ने अपनी पुत्री जम्बवती का विवाह अपनी गुफा से 8 किमी. दूर दक्षिण दिशा में एक साधु के धुना के सम्मुख शिव मंदिर में श्री कृष्ण के साथ कर दिया और उस स्थान का नाम ''**जनकपुर**'' रख दिया। क्योंकि जांबवान ने श्री कृष्ण को श्री राम एवं जांबवती को जानकी जी के स्वरूप में देखा था।

श्री जगदीश मंदिर के समीप बाई तरफ जनकपुर मंदिर दृश्य

वर्तमान में यह जनकपुर नामक स्थान कैमरी गाँव में स्थित है। बसंत पंचमी मेले के अवसर पर भगवान जगदीश, भाई बलदाऊ एवं बहिन सुभद्रा की रथ यात्राएँ जगदीश मंदिर से इसी जनकपुर तक जाती है।

ऐसी मान्यता है कि उस समय जंगल में श्री कृष्ण जम्बवती का कंकण बंधन श्री कृष्ण के आग्रह पर गुरु गोरख नाथ जी द्वारा किया गया था। पूर्व में भी श्री कृष्ण रुक्मणि विवाह में कंकन बंधन गुरु गोरख नाथ जी द्वारा ही किया गया था। इसका वर्णन जोधपुर महाराजा मानसिंह द्वारा रचित ग्रंथ ''**श्रीनाथ तीर्थावलीश**'' में मिलता है।

इसके साक्ष्य के रूप में जनकपुर कैमरी में आज भी गोरख नाथ जी का धुना बना हुआ है। आज से 50 वर्षों पूर्व उस धोने पर बाबा रामदास तपस्या करते थे। जांबवती विवाह में कन्यादान के रूप में जांबवान ने यह स्यामंतक मणि श्री कृष्ण को प्रदान कर दी। उस मणि और जाम्बवती को लेकर भगवान श्री कृष्ण द्वारका नगरी पहुँचे। सत्राजित ने झूठे आरोपों के लिए क्षमा मांगी और अपनी पुत्री सत्यभामा का विवाह भी श्री कृष्ण से कर दिया।

द्वारिका नगरी की स्थापना

भगवान श्री कृष्ण ने गोकुलवासियों व ग्वाल बालों के साथ द्वारिका के लिए प्रस्थान किया एवं विश्वकर्मा को आदेश दिया कि समुद्र के किनारे एक नगरी बनाओ। विश्वकर्मा ने फिर द्वारिका नगरी बनाकर तैयार की थी। जो आज समुद्र के बीच में हैं। भगवान श्री कृष्ण ने अपने गोकुलवासियों व ग्वाल बालों के साथ यहाँ रहने लगे। क्योंकि जरासंध के अत्याचारों से अपनी प्रजा को बचाना था। भगवान 35 साल द्वारिका में रहे, उसके बाद गांधारी के श्राप का समय आ गया। द्वारिका में तरह-तरह के अपशगुन होने लगे। यदुवंशियों का नाश होने लगा। भगवान ने अर्जुन को बुलावा भेजा कि आप द्वारिका आये और मेरे कुल के लोगों को यहाँ से ले जाएँ। पांडव वहाँ पहुँचे। इधर भगवान कृष्ण वन को चले गये और योग साधना में लेट गये। उधर जरा नाम का बधिक शिकार के लिए आता हैं और भगवान के

पैर में पदम चमक रहा था। जरा बधिक ने मृग समझ कर तीर चला दिया। वह भगवान को लगा। श्रापित भगवान ने अपनी देह छोड़ दी। उधर पांडवों ने बलदाऊ, सुभद्रा व कृष्ण के शरीर का अंतिम संस्कार समुद्र के किनारे किया। बताया जाता हैं कि भगवान का हृदय नहीं जला था। तभी समुद्र की लहरें तीनों के मृत शरीर को बहाकर ले गई। समुद्र मार्ग से लकड़ी के रूप में पुरी पहुँच गये। आदिवासी भील व सबर जातियों द्वारा नारायण के रूप में पूजा की जाती हैं। जो कि पौराणिक कथाओं के अनुसार नीलमाधव हैं, जो नीले पत्थर से बनी नारायण की एक छवि हैं।

उड़ीसा पुरी का श्री जगन्नाथ मन्दिर

मध्यकाल में मालवा के शासक इन्द्रदुमन थे। जिनके पिता का नाम भारत एवं माता का नाम सुमति था, बचपन से ग्वाल-बालों के साथ वन में जाया करता था, ग्वाल बाल भगवान श्री कृष्ण की

कहानियाँ सुनाया करते थे। एक दिन स्वप्न में राजा को भगवान ने दर्शन दिये और कहा कि ये सब ग्वाल बाल मेरे साथ कैर के वन आये ग्वाल बाल के वंशज हैं। पूर्व में मैं वचनबद्ध हूँ कि कलयुग में अपना समय इन्हीं सखाओं के साथ में गुजारूंगा। द्वारिकापुरी से मृत शरीर के अवशेष बहते हुए पूर्व दिशा में समुद्र के किनारे उत्कलप्रदेश में भील व सबर जातियों के पास सुरक्षित हैं। तदोपरान्त इन्द्रदुमन मालवा छोड़कर उत्कल प्रदेश चले जाते हैं। अवशेष पड़ी तीनों लकड़ियों को समुद्र से बाहर निकलवा कर तीनों लकड़ियों में से भगवान श्री कृष्ण, बलभद्र व सुभद्रा की मूर्ति बनवाने का आदेश प्राप्त हुआ। राजा इन्दुमन जब इन लकड़ियों को निकलवाता हैं तो भगवान विष्णु व विश्वकर्मा वहाँ पहुँच जाते हैं और राजा को बताते हैं कि हम इन लकड़ियों से तीनों की मूर्तियाँ तैयार करते हैं और तैयार करने में लगभग एक माह लगेगा। तब कोई भी व्यक्ति इस कमरे को नहीं खोलेंगा। इधर विश्वकर्मा भगवान की मूर्तियाँ बनाने लगे। उधर राजा उत्सुक होने लगा कि कब इन मूर्तियों को देखूँ। महीना समाप्त होने वाला था परन्तु राजा इन्द्रदुमन धैर्य खो बैठा और समय पूर्व ही दरवाजा खुलवाकर मूर्तियाँ देख ली जब तक मूर्ति बनकर तैयार हो चुकी थी परन्तु भगवान की मूर्तियों के हाथों के पंजे व पैरों के पंजे नहीं बनपाये थे। राजा को पश्चाताप होता हैं परन्तु भगवान विष्णु ने कहा कि राजन, विधि का विधान ही कुछ ऐसा ही लिखा था सो उसी रूप में भगवान उड़ीसा के पुरी में स्थापित हो जाते हैं।

संत शिरोमणि चंद्रमादास की कठिन दण्डवत यात्रा

संत शिरोमणि श्री श्री 1008
श्री चंद्रमादास जी महाराज

कालान्तर में श्री कृष्ण के आशीर्वाद के चलते यहाँ भक्त चंद्रमा दास का प्रादुर्भाव हुआ, वे कैमरी से कनक दंडवत देते हुए उड़ीसा के पुरी मंदिर गए भगवान जगन्नाथ ने चंद्रमा दास को साक्षात दर्शन दिए और इच्छानुसार भगवान सविग्रह, भाई बलदाऊ, बहिन सुभद्रा के सहित कैमरी पधारे। ऐसा माना जाता है बसंत पंचमी के दिन उड़ीसा के पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर के पट कुछ समय के लिए बंद रहते हैं, क्योंकि भगवान ने भक्त चंद्रमा दास को एक दिन अपने विग्रह सहित विराज मान रहने का वचन दिया था। इधर समय गुजरता गया कलियुग चल रहा था आज से लगभग 400 वर्ष पूर्व एक भक्त का जन्म विक्रम संवत् 1701 भादों बुदी 5 शुक्रवार को रेवती नक्षत्र मेष के चन्द्रमा ब्रह्म मुहूर्त में हुआ। इनका जन्म सुधर्मा देवी के गर्भ से हुआ। इनके पिता का नाम मुरधीधर गुर्जर था। इनका

जन्म गाँव नागतलाई (गंगापुर सिटी), सवाई माधोपुर, राजस्थान में हुआ था। जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। भक्त का लालन-पालन बड़े प्यार से किया गया।

उधर नागतलाई गाँव में अकाल पड़ने लगा। गायों के लिए चारे पानी की कमी आने पर माँ सुधर्मा देवी व मुरलीधर गुर्जर गाँव कैमरी में अपनी मवेशियों के साथ आ जाते हैं, सुधर्मा देवी अपने पीहर में रहकर भक्त चन्दनराम का नामकरण करवाया गया। चन्दनराम में बाल्यकाल से ही भक्ति के बीज अंकुरित होने लगे। ऐसा कहा जाता हैं कि भक्त उद्धव का जन्म चन्दनराम के रूप हुआ हैं। भक्त बड़े हुए तो इन्होंने गुरु की शरण में जाना उचित समझा। ये ब्रजदास महाराज के पास गये और उनसे दीक्षा ली। ये चन्दनराम से चन्द्रमादास हो गये। इधर माता-पिता को चिन्ता होने लगी कि चन्दनराम भक्ति अधिक करता हैं। ये हमसे दूर जा सकता हैं, तो माता सुधर्मा देवी ने अपने पति मुरलीधर से कहा कि क्यों ना इनका विवाह करवा दिया जावे। मुरलीधर गुर्जर ने इनका संबंध विक्रम संवत् 1722 में जहाजपुर निवासी अवाना गोत्र की सुलक्षण लड़की जमना देवी से करवा दिया जाता हैं। जमना देवकी के आने के बाद भी भक्त चन्द्रमादास अपनी भक्ति में लीन रहने लगा।

गायों को चराना और भगवान श्री कृष्ण का ध्यान करना उनका नित्य कर्म था। वह भक्ति में परिपक्व होने लगा विरह भाव आने लगा।

वह अपने माता-पिता व पत्नी से बोला कि मैं भगवान जगन्नाथ उड़ीसा के लिए कनक दण्डवत जाऊंगा। घरवालों व परिवार वालों के काफी मना करने के बावजूद वह जाने को तैयार हो जाता हैं तो उनकी पत्नी जमनादेवी भी उनके साथ जाने की हठ करती हैं। वह उससे मना करता हैं कि तुम सास-ससुर की सेवा करना परन्तु जमना देवी तो साथ में चलने की जिद करती हैं और कहती हैं कि ''**जिय बिन देह, नदी बिन वारिं। ऐसे ही नाथ पुरुष नारि।**'' मैं आपके बिना नहीं रह सकती। अंत में जमुना देवी भी सास सुधर्मा देवी व ससुर मुरलीधार की आज्ञा लेकर पति के साथ कनक दण्डवत जाते हुए भक्त चन्द्रमादास की चरणरज लेती हुई आगे बढ़ती जा रही हैं। विक्रम संवत् 1725 ज्येष्ठ शुक्ला 12 शुक्रवार अनुराधा नक्षत्र में सुबह आठ बजकर 12 मिनट पर कनक दण्डवत जगन्नाथ धाम उड़ीसा के लिए प्रस्थान करते हैं। अब भक्त चन्द्रमादास और जमनादेवी निश्चिंत होकर आगे बढ़े जा रहे हैं।

पीछे छूटने का पाश्चाताप नहीं, भविष्य की चिंता नहीं, सिर्फ धारणा हैं तो एक ही हैं कनक दण्डवत करते हुए भगवान के दरबार पहुँचना। क्या सर्दी, क्या गर्मी, क्या वर्षा क्या अंधेरा, क्या उजाला सबको दरकिनार करते हुए निरंतर आगे बढ़े जा रहे हैं। रास्ते में कुछ मिल गया तो पा लिया अन्यथा भूख प्यास को मारते हुए आगे बढ़ रहे हैं। लगभग 250-300 किलोमीटर चलने के बाद रास्ते में पड़ने वाले

गाँवों के लोग हँसी मजाक करने लगे कि ये कैसा भक्त हैं, जो औरत को अकेले में साथ लेकर बगुला भगत बना बैठा हैं भला ये कैसे भगवान को पायेगा। ये निन्दा सुनकर भक्त चन्द्रमा दास ने अपनी पत्नी जमुना से कहा कि मैंने पूर्व में आपसे कहा था कि ये लोग निन्दा कर रहे हैं, आप भी इनकी बातों को सुन रही हैं तो जमुना देवी ने अपने पति की भक्ति को पूर्ण करने के लिए चरण रज लेकर अपने प्राण छोड़ दिये। निन्दा करने वाले लोग हतप्रद रह गए और उनकी भूरी-भूरी प्रशंसा करने लगे।

जमुना के किनारे भक्त के साथ लोगों ने दाह संस्कार किया और उस जगह पर यादगार बनाई गई जिसका नाम जमना देवी के नाम पर जमुनामठ रखा गया जो आज तक जमुना मठ के नाम से जाना जाता हैं। अब भक्त चन्द्रमादास निश्चिंत होकर कनक दण्डवत आगे बढ़ते हुए जा रहे हैं, निरन्तर कनक दण्डवत से शरीर में घाव पड़ जाते हैं और कीड़े पड़ गये जो जमीन पर गिरने लगे भक्त उन कीड़ों को वापिस घावों में रखने लगे। जिससे ये जीव परेशान ना हो। ऐसी स्थिति से भगवान का सिंहासन काँपने लगा। भगवान श्री कृष्ण ने इन्द्र को आदेशित किया और माया के वशीभूत करके अपने रथ से अविलम्ब भगवान के धाम जगन्नाथपुरी में पहुँचा दिया, वहाँ पहुँचते ही भक्त देह ताम्रवर्णी हो गई।

भगवान भक्त से प्रसन्न हो गए और वरदान मांगने के लिए कहा

तो भक्त चन्द्रमादास ने भगवान का स्वरूप तीनों मूर्तियाँ मांगी और कहा कि महाराज मैं आपको इसी रूप में गाँव कैमरी में ले जाना चाहता हूँ, तो भगवान ने कहा कि भक्त तुम्हारा मेरा पूर्व जन्म का संस्कार हैं और कैमरी के भक्तों को मैंने द्वापर में वादा किया था कि मैं एक दिन यहाँ स्थापित रहूँगा। उन्होंने विश्वकर्मा को आदेशित किया तीनों मूर्तियाँ बनवाकर इन्द्र के रथ में विराजमान होकर कैमरी को धाम बनाने के लिए प्रस्थान कर जाते हैं और विक्रम संवत् 1735 में आषाढ़ सुदी 2 को गाँव कैमरी में विधिवत रूप स्थापित हो जाते हैं। चारों ओर खुशी का वातावरण हो जाता हैं। पुष्प वर्षा होती हैं और मंगलाचार बधाएँ गाये जाते हैं। इस प्रकार इस स्थान को पुरी के बाद अपना दूसरा तीर्थ स्थल बनाया गया। भक्त चन्द्रमादास निरंतर उनकी पूजा अर्जना करते और उनकी भक्ति में ही लीन रहते थे। भक्त चन्द्रमादास सेवा करते-करते विक्रम संवत् 1820 में समाधि में लीन हो जाते हैं। उनकी समाधि ठीक मन्दिर के सामने बनी हुई हैं।

1. लोगों में भगवान और उनके सेवक श्री चंन्दरमादास जी के प्रति गहरी आस्था है, आज भी अमावस्या, पूर्णिमा, सप्तमी और आषाढ़ दोज और बसंत पंचमी के अवसर हजारों महिला, पुरुष, बच्चें अपनी मनोकामना पूरी होने पर कनकदण्डवत देते है। पूर्व में बस्ती के पंच पटेलों और अब मंदिर ट्रस्ट के द्वारा मंदिर प्रांगण के चारों और कनकदंडवत मार्ग निर्धारित किया हुआ है।

भगवान श्री जगन्नाथ की भक्ति के चमत्कार – लोक आस्था के धाम के संदर्भ में पंचों ने बताया कि विरामपुर ढाणी के मनोहरी पुत्र श्री अर्जुनराम पटेल था, जिनकी ससुराल गोकुल के पास भैंसा गाँव में थी। जिनकी पत्नी कम्पूरी देवी भगवान श्री कृष्ण की अनन्य भक्त थी। उनका दाम्पत्य जीवन समयानुसार वृद्धावस्था की ओर बढ़ रहा था। जीवन में निराशा का पल बढ़ रहा था, मनोहरी बाबा की उम्र 72 वर्ष और कम्पूरी देवी की उम्र 66 वर्ष हो गई। श्री कृष्ण के प्रति भक्ति भाव से प्रेरित होकर मंदिर प्रांगण से लगी तीन बीघा जमीन को दान करने का विचार दोनों के मन में आया। मंदिर प्रांगण में पंच पटेलों के समक्ष तीन बीघा जमीन दान करने का संकल्प लेते हैं तो पंचों के मुख से देववाणी निकलती है, "**भगवान तेरी गोद भरैगो**"। भगवान की कृपा, चंन्द्रमादास जी के आशीर्वाद से विक्रम संवत् 2016 माघ बसंत पंचमी को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इसकी चर्चा दूर दूर तक फैली और भगवान के प्रति लोगों की गहरी आस्था बढ़ गई। पुत्र का नामकरण राधेश्याम के नाम से किया गया, राधे बाबा और उनके तीनों पुत्र, परिवार बच्चे सकुशल जीवनयापन कर रहे है, आज भी भगवान के प्रति गहरी आस्था है।

2. एक और भक्त नरेश मास्टर बताते हैं कि उनकी धर्म पत्नी रूकम बाई को कोई दुर्लभ बीमारी थी, गरीबी और बेरोजगारी के चलते इलाज का कोई जरिया नहीं आया। नरेश भगत और उनकी पत्नी

रूकमबाई ने भगवान की दण्डवत शुरू की निरन्तर सुधार होता चला गया और आज भी अपनी गहरी आस्था बनाए हुए है।

3. पंचों का मानना है कि क्षेत्र के लोगों ने कभी किसी भी राजा को कर नहीं दिया। पीलौदा गाँव के पंचों ने भी कर नहीं दिया तो जयपुर रियासत के लठैत बंदी बनाकर ऊँटों पर लादकर पंचों को ले जा रहे थे। कैमरी गाँव आते ही पंचों ने श्री गोपाल जी (ठाकुर जी का मंदिर) से विनती की। लोगों ने रात के अंधकार में आवाज सुनी और बंदी लोगों को छुड़ा लिया। जयपुर राजा जयसिंह के लठैतों ने दरबार में जाकर बात सुनाई और हजारों की सेना लेकर कैमरी पर धावा बोल दिया। लोगों ने बताया कि विपक्षी सेना के हथियार नहीं चले और हारकर लौट गए। जनकपुर के पास कुरुक्षेत्र बताते है, जहाँ पर इस लड़ाई के सबूत मिलते है।

4. रियासती काल में शहर व मोरडा पंचपरगने लगते थे। भयंकर अकाल के समय पशु पक्षी और मनुष्य में त्राहि-त्राहि मच गई। भगवान के श्री चरणों में जाकर मनौती मांगी और ढण्ड का पुरा निवासी बाबा रामसुखा ने पंचपरगनों को खदेड़कर भगा दिया रातों रात लोगों ने मिलकर कुँए का निर्माण किया, भगवान श्री जगदीश जी की कृपा से अटूट पानी निकला जिससे पूरे क्षेत्र की प्यास बुझाई जाती थी। **''बंधन का कुँआ''** आज भीखंडहर स्थिति में मौजूद हैं और बताया जाता है कि इसी कुएँ से भैरव

बाबा प्रगट हुए, जिनका स्थान पास में ही बना हुआ है।

5. जब-जब क्षेत्रीय समस्या हो, आक्रमण हो या कोई कठिन परिस्थिति भगवान के प्रति जन-जन की गहरी आस्था है और सर्वसमाज के लोग निरन्तर इन परम्पराओं, विरासत और धार्मिक निष्ठा को बनाए हुए हैं।

जो ग्वाल बाल भगवान श्री कृष्ण के साथ उस समय ब्रज से आये थे। उनमें से ब्रज गाँव पान्हौरी के भी थे, कालान्तर में इन ग्वाल-बालों के वंशजों में जगराज सिंह खटाना हुए, का मन यहाँ लग गया और भगवान श्री कृष्ण के भक्त के रूप में यहीं स्थित कैर के जंगल में बस गये कि भगवान यहाँ लीला करने आयेंगे। जिनके बारह बेटों ने बारह गाँव बसाए।

जो निम्न प्रकार हैं- 1. सुआ, 2. समदा, 3. डाबड़ा, 4. हरिया, 5. दोयपाल, 6. भौमपाल, 7. किरतपाल, 8. माणकपाल, 9. राजपाल, 10. विजयपाल, 11. रणपाल, 12. रिछपाल।

दोयपाल ने माचड़ी बसाई, भौमपाल एवं किरतपाल वापस पान्हौरी गाँव चले गए। दोयपाल राव जी के बेटे लक्ष्मण सिंह था। लक्ष्मण सिंह के बेटे हरसुखराव, हरसुखराव के बेटे बैराराव।

- बैराराव - बाड़ा वाजीदपुर बसाया।
- भूराराव - कोलेता बसाया।

- धीराराव ने धीगधौड़ाई गाँव बसाया।
- सूड़ाराव कैमरी गाँव में ही बसे रहे।
- सूड़ाराव के बेटे कोतल के अधैत,
- जुग्गा के भीतलिया,
- लखन सिंह ने खेड़ली गाँव बसाया।
- रावसूड़ा के अन्य दूसरे बेटा देबरा के चांदमल ने खेड़ला गाँव बसाया।
- गुदड्या ने रलावता बसाया।
- जाला ने तेसगाँव बसाया और एक विशाल जल बांध का निर्माण करवाया।

समथर रियासत

उत्तर प्रदेश के झांसी जिले में पहुजा और बेतवा नदियों के बीच स्थित है। जागीरदार की पोथी से पता चलता है कि समथर गाँव की स्थापना दादा जगराजसिंह खटाना के पुत्र राजपाल ने की थी। समथर गाँव बुंदेलखंड में समतल मैदानी क्षेत्र में स्थित होने के कारण निरन्तर फलता फूलता रहा है। 1735 ई. में विक्रम संवत् 1678 में स्वतंत्र रियासत की स्थापना नौनेशाह गुर्जर ने की थी। शक्ति संपन्न प्रथम राजा रणजीत सिंह 1817-27 हुए, जिनका उस समय विवाह चल रहा था। 1817 में इस रियासत को अंग्रेजों ने मान्यता दी। पाँचवें राजा राधाचरणसिंह ने 1933 में लंढौरा रियासत के राजा की बेटी से विवाह

किया, जो कि हरिद्वार उत्तराखंड में एक मात्र गुर्जर रियासत थी। सातवें राजा रणजीत सिंह द्वितीय थे, जिनकी पुत्री निहारिका खटाना का विवाह मुख्यमंत्री श्रीमति वसुंधरा राजे के सुपुत्र धौलपुर रियासत के राजकुमार दुष्यंत सिंह के साथ हुआ। पं. श्री गोपाल शर्मा बताते है समथर रियासत उनकी जजमानी में आते है और नौनेशाह गुर्जर के वंशजों की पैतृक जागीर तेसगाँव में बताई जाता है।

कैमरी गाँव की वंशावली क्रम

रावजुगराज सिंह खटाना

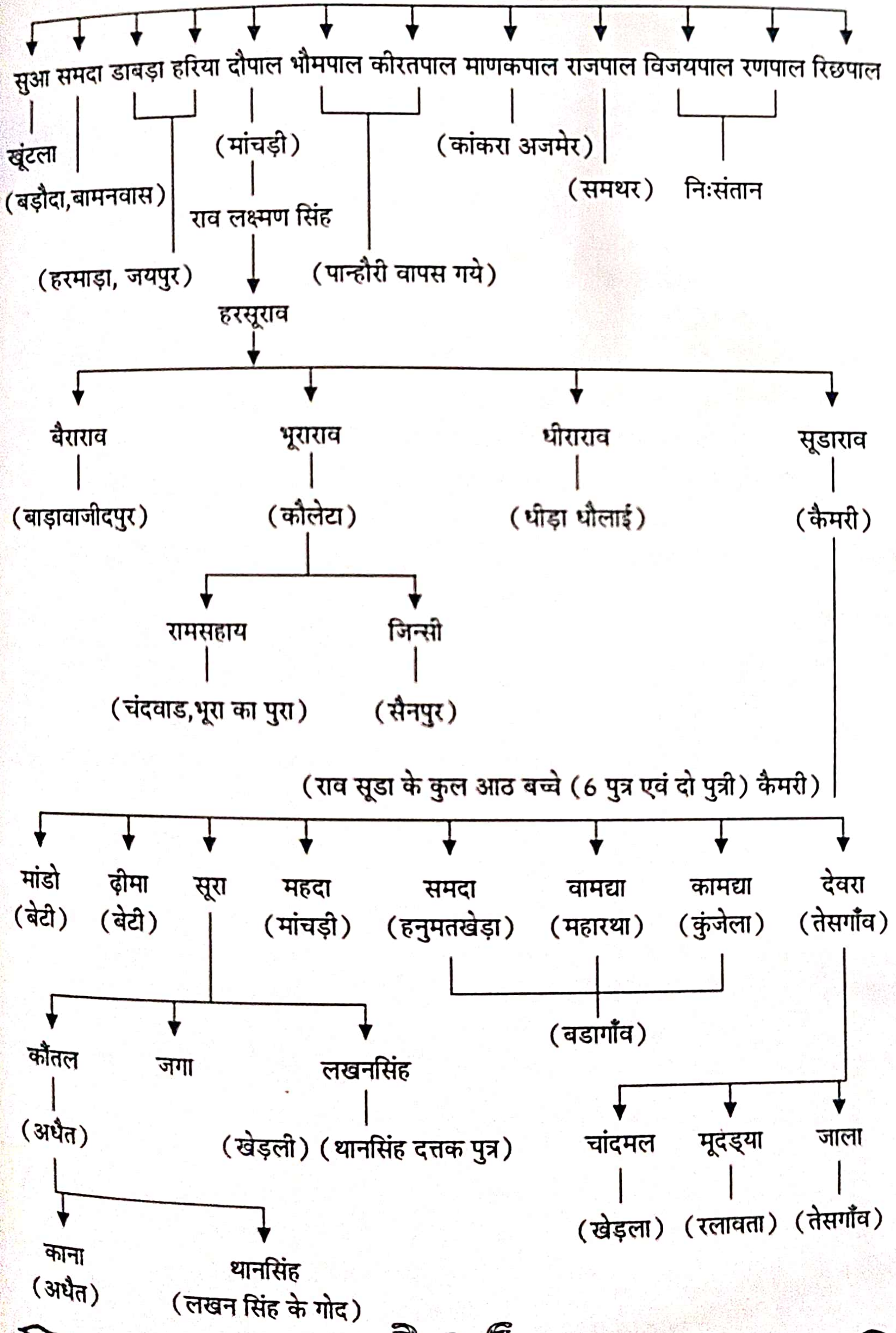

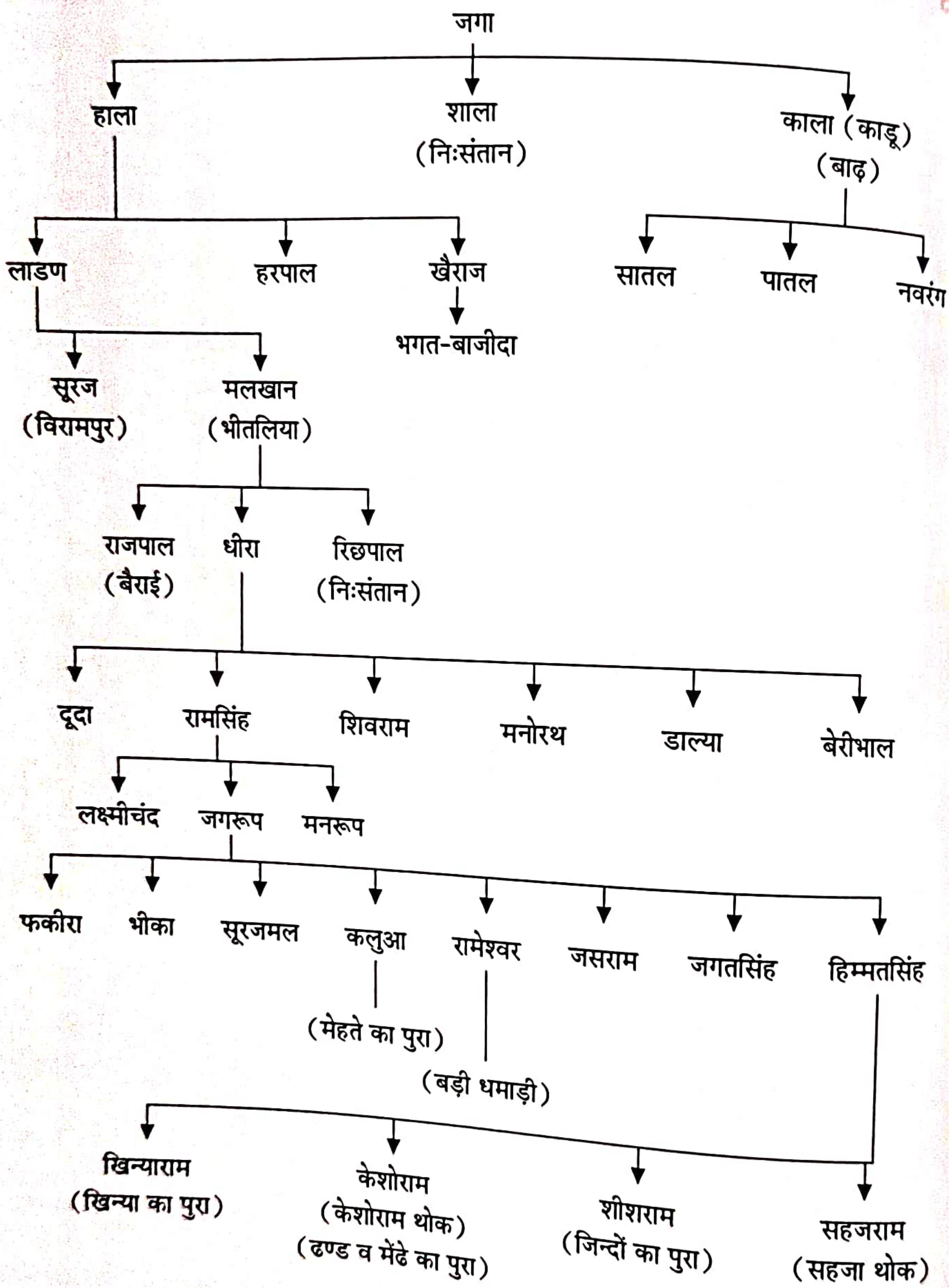
जगा
हाला
शाला
(निःसंतान)
काला (काडू)
(बाढ़)
लाडण
हरपाल
खैराज
भगत-बाजीदा
सातल
पातल
नवरंग
सूरज
(विरामपुर)
मलखान
(भीतलिया)
राजपाल
(बैराई)
धीरा
रिछपाल
(निःसंतान)
दूदा
रामसिंह
शिवराम
मनोरथ
डाल्या
बेरीभाल
लक्ष्मीचंद
जगरूप
मनरूप
फकीरा
भीका
सूरजमल
कलुआ
रामेश्वर
जसराम
जगतसिंह
हिम्मतसिंह
(मेहते का पुरा)
(बड़ी धमाड़ी)
खिन्याराम
(खिन्या का पुरा)
केशोराम
(केशोराम थोक)
(ढण्ड व मेंढे का पुरा)
शीशराम
(जिन्दों का पुरा)
सहजराम
(सहजा थोक)

कैमरी परिक्षेत्र में गुर्जर समुदाय के साथ साथ विरथला-ब्राह्मण, नाथ सम्प्रदाय छाबड़ी गोत्र के योगी, बनिया, कोली, नाई, माली, वर्गी, बैरवा, हरिजन, जांगिड, कुम्हार आदि समुदाय के लोग भी निवास करते है। खटाना गौत्र के गुर्जर, ऊँचा कद, चौड़ा ललाट, पेनी नाक और मोटी आँखों के साथ बहादुरी और वीरता के लिए पहचाने जाते है।

बताया जाता हैं कि कैमरी गाँव के चारों तरफ सात गेट थे। बीचों बीच में प्राचीनकालीन भगवान ठाकुर जी का मन्दिर था। जिसको तोड़ने के लिए अकबर की सेना ने आक्रमण किया था। जिसके तहत बीरथला ब्राह्मण ने लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए और उनकी पत्नी चिता पर सति हो गई थी। पुराना बाजार में आज भी सति माता का मंदिर स्थित हैं और अकबर की सेना से लूटे गए हथियार आज भी भगवान ठाकुरजी के मंदिर में दबे हुए हैं।

कैमरी गाँव पर अनेक बार आक्रमण हुए लेकिन भगवान जगदीश की कृपा से आक्रमणकारी हमेशा परास्त हुए क्योंकि उनके हथियार नहीं चलते थे। एक समय कैमरी, रौंसी जागीर में आती थी। यहाँ का जागीरदार अयासी प्रवृत्ति का था, जिसका सिर काटकर, उसमें बड़ का वृक्ष लगाया। यही कारण है कि आज खटाना एवं कैमरी के छाबड़ी परिवार की ''**धराडी**'' बड़ के पेड़ को माना जाता है।

बारह गाँव कैमरी में वर्तमान समय में लगभग नौ ग्राम पंचायत

(कैमरी, बाड़ावाजीदपुर, खेड़ला, जिन्दों का पुरा, मेढ़े का पुरा, तेसगाँव, रलावता, बड़ागाँव, डूंगापुरा। सत्तर ढाणियां (पुरा) जिसमें प्रमुखतः ढण्ड का पुरा, जिंदों का पुरा, भूतों का पुरा, भैराई, होदाहोली, गोपालपुरा, विरमपुरिया, कुन्जा की ढाणी, मेहते का पुरा, खेड़ला, खेड़ली, बाढ़ कैमरी, बड़ी धमाड़ी, छोटी धमाड़ी, ककड़ा, बीलई, सैनपुर, चंदवाड, भूरे का पुरा, बेड़े का पुरा, गद्दीन का पुरा, जगन का पुरा, बांड्या बाबा की ढाणी, काला डबरा, खिन्या की ढाणी, खादया-अड़ूक्या का पुरा, घतौली, मांचड़ी, वीर बाजीदा पुल की ढाणी, आमन का पुरा बाडा वाजीदपुर, इत्यादि छोटे बडे गाँव सम्मिलित है। ये क्षेत्र अपनी अद्भुत सांस्कृतिक विभिन्नताओं के कारण प्रसिद्ध है।

- श्री जगदीश धाम मंदिर ट्रस्ट पदाधिकारियों का नाम एवं कार्यकाल

1. श्री प्रभूराम गुर्जर हवलदार, ढण्ड का पुरा
2. श्री मिश्रीलाल पटेल, जिन्दों का पुरा।
3. श्री जमूरा पटेल, बड़ागाँव।
4. श्री बृजलाल सरपंच, बाड़ा वाजीदपुर।
5. श्री बृजवासी खटाना सूबेदार, मेहते का पुरा।
6. श्री कांति प्रसाद जांगिड़, ठेकेदार, कैमरी।
7. श्री तुलसीराम खटाना सूबेदार, खेड़ली (01.01.2013-22.02.2017)।

8. श्री रामनिवास खटाना सूबेदार, ढण्ड का पुरा (22.02.2017-01.04.2022)।

9. श्री लाखन सिंह सरपंच, तेसगाँव (01.04.2022-19.05.2024)।

10. श्री घनश्याम खटाना, एसआई, खेड़ला (19.05.2024 से.....)

बसंत पंचमी का मेला

माघ माह में बसंत पंचमी के अवसर पर लक्खी मेले का आयोजन होता है। क्षेत्र के विभिन्न अंचलों के लोक जीवन में रची बसी लोक संगीत नृत्य एवं प्रदर्शनकारी कलाओं जो विभिन्न सामाजिक धार्मिक अवसरों पर देखने को मिलती है, जिनका अपना विशेष महत्त्व है जो कि विभिन्न पर्वों और धार्मिक अनुष्ठानों के दौरान सहज से अभिव्यक्त होती है। मेले में पारम्परिक परिधानों में सजे धजे पुरुष एवं महिलाऐं, लहलहाती सतरंगी चुनरी ओढकर शोभा बढाती बालिकाएँ रंग-बिरंगे गुब्बारे, सजे धजे हाथी, घोड़े और ऊँट सिर पर अनेक मटकियाँ रखकर स्वागत को आतुर महिलाऐं रथ यात्रा की शोभा में चार चाँद लगाते है।

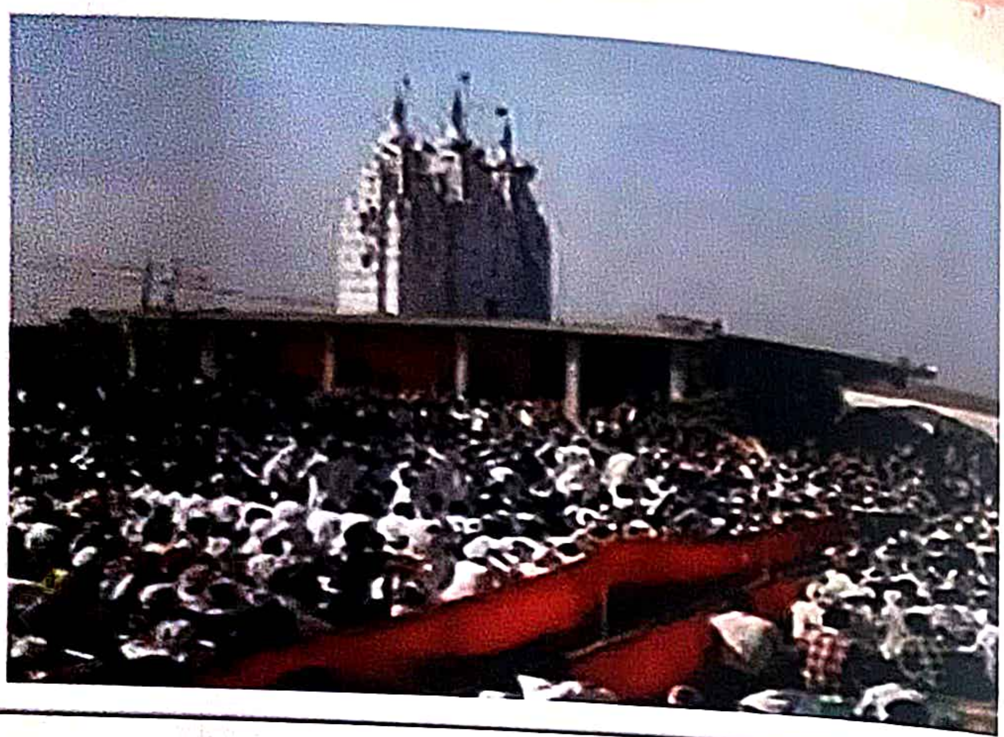

फाइल फोटो-बसंत पंचमी मेला दर्शन

बारह बजे भगवान जगदीश की शोभायात्रा शुरू होती है जो रथ में प्रतिमा रखकर जयकारों के उद्घोष और मंगल गानों के साथ जनकपुर स्थित माँ जानकी के मंदिर पर पहुँचती है। लाखों की उमड़ी भीड़ द्वारा मिलकर महाआरती की जाती है। मेले के पर्व पर मंच के माध्यम सामाजिक मुद्दों, व्याप्त कुरीतियों को मिटाने एवं अन्य आवश्यक बिन्दुओं पर चर्चा की जाती है। मेले के अवसर पर नाल प्रतियोगिता, कुश्ती दंगल, घुड़ दौड़, ऊँट दौड़, बैलगाड़ी दौड़ प्रतियोगिताओं का आयोजन श्रीजगदीश धाम मंदिर ट्रस्ट कमेटी के द्वारा किया जाता है। खास बात ये है कि मेले में पधारें मेहमानों को ठहरने की व्यवस्था प्रत्येक घर पर होती है। चालीस-पचास लोगों के ठहरने की व्यवस्था-खीर पुए के साथ आगवानी की जाती है।

तुमसे ही शोभा है मेले की तुमसे ही शान हमारी है
जगदीश धाम मेले की अबकी शानदार तैयारी है....
तुम भी आना साथ में लाना दुश्मन - दोस्त व्यवहारी को
तुमसे ही शोभा है मेले की तुमसे ही शान हमारी है...
हर घर पर मेहमानवाजी को पलक पावणे बिछा रहे,
महिनों भर से बैय्यरबानी घर आंगन खूब संवारी है,
देशी खाना देशी गाना देशी जीवन का उमंग त्यौहार है,
तुमसे ही शोभा है मेले की तुमसे ही शान हमारी है....
ताली, बाजना, राडोदे के मावई भी दर्शन पाएंगे,
बैंसलात और बिडरवास, फागने मेले की शान बढाएंगे,
चपराणे, दणगस, सोलंगा, जगरोटी की भारी तैयारी है
तुमसे ही शोभा है मेले की तुमसे ही शान हमारी है....
मान और मनुहार की खातिर खड़े खटाने पलक बिछाए
तुम भी आना साथ में लाना जितने भी तुमसे बन पाए
गाँव और मंदिर की शोभा जग में अजब निराली है
तुमसे ही शोभा है मेले की तुमसे ही शान हमारी है....

इस प्रकार युवा बड़े जोश के साथ अपनी संस्कृति को जीवंत रखने के लिए प्रतिवर्ष अपनी भागीदारी निभाते हैं।

पाँच दिवसीय मेले के अवसर पर अनेकों सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता हैं। जिसके अन्तर्गत लोक गीत, कीर्तन, रसिया-दंगल, कवि सम्मेलन, राम-रसिया, कुश्ती-दंगल, नाल प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता हैं।

अन्य प्रमुख धार्मिक स्थल

इन मंदिरों को दो श्रेणियों में विभाजित करेंगे-

(अ) जगदीश धाम कैमरी के आस पास के मंदिर

1. कीजर धाम, जांबवान की गुफा, भंडारी - श्री जगदीश धाम कैमरी से मात्र आठ किलोमीटर दूर बालघाट के पास भंडारी गाँव में स्थित है भगवान श्री कृष्ण और जामवंत की लड़ाई और जामवंती विवाह, श्रीमद्भगवत के दशम स्कंध में पैतालीसवें अध्याय में वर्णित दृष्टांत है। क्षेत्र में एक सिंह का भयानक आतंक था। जिसके मदमर्दन करने लिए भगवान श्री कृष्ण यहाँ आए थे, जामवंत की बेटी जामवंती ने साधारण पुरुष को देखा तो भयभीत हो गई, तत्पश्चात जामवंत और श्री कृष्ण में कौष्तुभ मणि को लेकर 27 दिनों तक मल्लयुद्ध हुआ था अंत में जामवंत (जाम्भान) की हार हो गई लेकिन प्रार्थना की कि आप साधारण पुरुष नहीं हो सकते भगवान अपना वास्तविक रूप दिखाओ। बताया जाता है कि भगवान ने साक्षात् दर्शन दिए और स्मृति के

लिए पत्थर पर लात मारी, तो पदचिन्ह बन गया जो आज भी मौजूद है। धरातल से सैंकडों फिट की ऊँचाई पर भी निरन्तर पानी भरा रहता है, पास ही जामवंत की गुफा है जो कि पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार 44 किलोमीटर बताई जाती है। गुफा के अंदर अनेक श्रृंखलाएँ है। सुंदर और रमणीय स्थल के ऐतिहासिक महत्त्व को दृष्टिपटल पर लाने के लिए वीरेन्द्र खटाना व्याख्याता (कैमरी), समाजसेवी श्रीमान शीशराम खटाना, श्रीमान हरदयाल गुरुजी, इतिहासवेत्ता एवं श्रीमान डा. भूरसिंह फागना डूंगापुरा मौजूद थे।

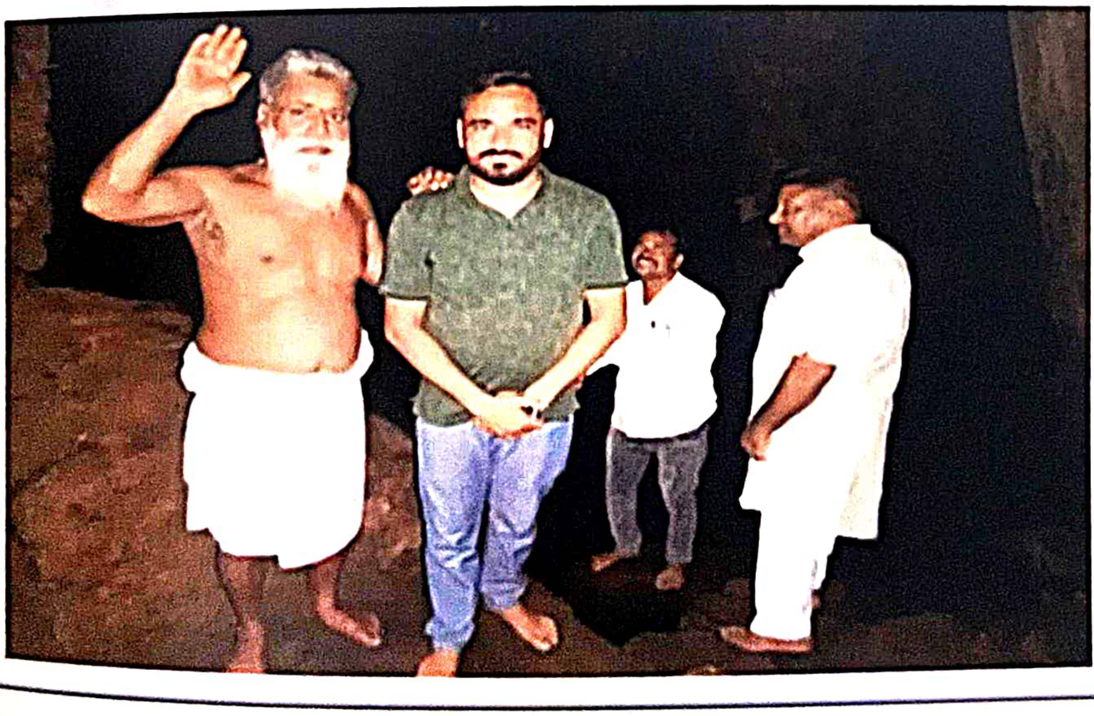

2. कुठीला धाम, बालाजी मंदिर पहाड़ी, बाढ़।
3. गुरु गोरखनाथ, भरतहरी गोपीचंद मंदिर कैमला - पूर्वी राजस्थान का एक मात्र गोरख नाथ जी का मंदिर

4. पौराणिक नगरी गढमोरा - श्री जगदीश धाम कैमरी से मात्र सत्रह किलोमीटर अरावली की पहाड़ियों में बसा एक पौराणिक नगर है गढमोरा अर्थात् मोर ध्वज का गढ एक लेख नवभारत टाइम्स के अनुसार इस नगर को महादेव ने बसाया था, जो कि पौराणिक नगरी काशी के समकालीन माना जाता है। कालांतर में यहाँ ककराला गाँव के राजा के सात बेटियाँ थी, इनमें से सबसे छोटी बेटी मानती थी कि मैं अपने भाग्य का खाती हूँ। राजा ने क्रोधित होकर उसकी शादी मोर से करवा दी। एक दिन भयंकर तूफान के चलते मोर मर जाता है तो वह कन्या भगवान महादेव की कठिन तपस्या करती है और भगवान खुश होकर उस मोर को जीवित कर देते है और उसे मानव देह का वरदान मिलता है लेकिन इनके सर पर मोर की कलंगी यथावत रहती है, जिससे ''मोरध्वज'' नाम पड़ा।

फाइल फोटो : गढ़मोरा किला

वर्तमान में राजस्थान पर्यटन विभाग के द्वारा यहाँ जीर्णोंद्धार का कार्य करवाया जा रहा है, महलों को संरक्षित किया जा रहा है। मकरसंक्रांति के अवसर में कुंड स्नान के लिए हजारों की संख्या में पर्यटक लुफ्त उठाने आते है।

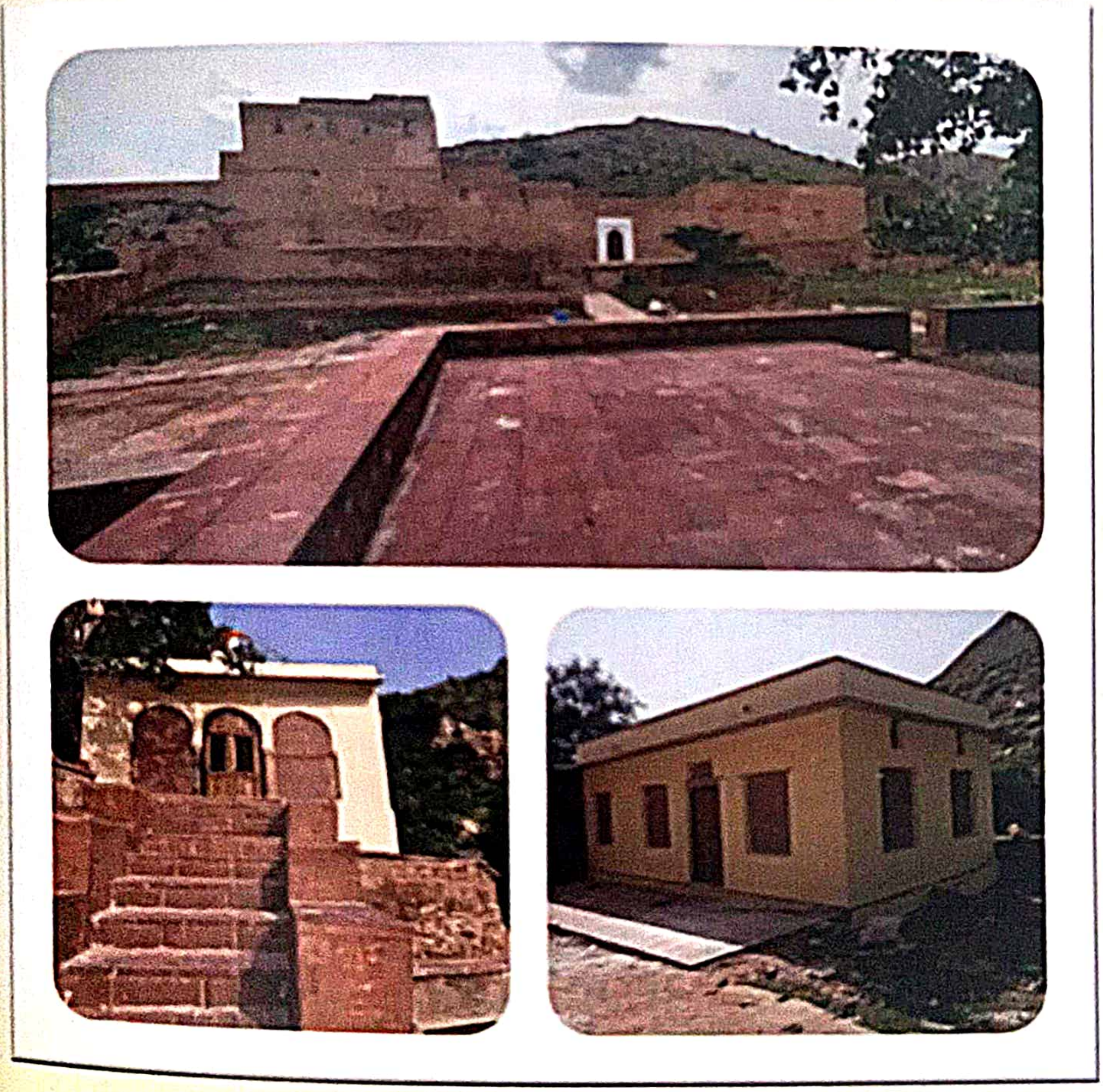

फाइल फोटो : गढ़मोरा में बने दर्शनीय स्थलों का जीर्णोद्धार

5. घट वासिन माता मंदिर, गुढ़ा चंद्रजी। मेहर मीनाओं की कुल देवी।

6. जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर श्री महावीरजी का भव्य मंदिर, महावीर जी।

7. गोवर्धन पर्वत - भगवान श्री कृष्ण ने इंद्रदेव के प्रकोप से ग्वाल बालों को बचाने हेतु गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली पर उठा लिया था। बताया जाता है कि ग्वाल बाल इस क्षेत्र में आने बाद मोरडा गाँव के पास बने पहाड पर गोवर्धन पूजा किया करते थे। कई दसकों पूर्व यहाँ पुनः दैवीय शक्ति प्रज्ज्वलित हुई, यहाँ गोवर्धन मंदिर बना हुआ है जहाँ पर गाय के पहले दूध को यहाँ चढ़ाया जाता है।

(ब) जगदीश धाम कैमरीपरिक्षेत्र के मंदिर

1. भगवान श्री देवनारायण मंदिर, जगदीश चौक कैमरी - मंदिर प्रांगण में ही भगवान श्री देवनारायण का मंदिर बना हुआ है। श्री देवनारायण की माँ साडू खटाणी मालवा के शासक की पुत्री थी, बगडावत सवाई भोज से विवाह हुआ और बगडावत महाभारत की मुख्य पात्र नायिका भी रही। भगवान श्री देवनारायण की विष्णु अवतार की पूजा की जाती है।
2. भौमिया बाबा मंदिर, कैमरी
3. प्राचीन ठाकुर जी का मंदिर - माना जाता है कि इस मंदिर की स्थापना श्रीकृष्ण, बलदाऊ और सुदामा जीकी स्मृति में संदीपनी ऋषि आश्रम विद्या अध्ययन के समय की गई।

4. चामुंडा माता मंदिर - यह मंदिर भगवान जगदीश के मंदिर से मात्र 500 मीटर की दूरी पर स्थित है। यह माना जाता है कि इस अजय गढ़ कैमरी रक्षक देवी चामुंडा है, जो शत्रु द्वारा आक्रमण किए जाने पर किलकारी मारकर पूरी बस्ती की जगा देती थी ऐसा वाकया मुगल आक्रमण के समय हुआ था, जब मुगलों को यहाँ से पराजय का सामना करना पड़ा, वे आपस में ही लड़ कर मर गए। बचे खुचे सैनिकों को बस्ती के लोगों ने मार भगाया।
5. प्राचीन चमत्कारेश्वर हनुमान मंदिर, माली पाड़ा, कैमरी - यह धाकड़ कालीन मंदिर है, जो तांत्रिक साधना का केंद्र माना जाता है।
6. कैमरी बुर्ज पर स्थित बटुक नाथ भैरव मंदिर - यह कैमरी प्रवेश द्वार का सबसे प्राचीन मंदिर है, जहाँ बारह गाँव के नव दंपति जात करने आते हैं। इसी मंदिर बुर्ज के कारण कैमरी का नाम कैमरी बुजुर्ग पड़ा था।
7. सती माता मंदिर कैमरी, बीरथला ब्राह्मणों की कुल देवी - गाँव सात द्वारों से सुरक्षित था। हंतोशाही मोहर प्रकरण को लेकर अकबर की सेना ने आक्रमण कर दिया था, जिसकी सेना का नेतृत्व जयपुर के महाराज मानसिंह ने किया था। गाँव का विरथला ब्राह्मण अपनी ससुराल गया हुआ था जहाँ पर उसने जल्दी से दुल्हन को तैयार करने को कहा था हवाला दिया कि गाँव पर मलेच्छों का आक्रमण हो गया है। किसी महिला ने ताना

दे दिया कि तू कौनसा शहीद होगा। बताया जाता है कि उसी कदम वह ब्राह्मण लौट आता है और लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हो जाता है। पीहर महिला गोबर के कंडे बना रही था तो उसके हाथ में नारियल बन गया, वह गाँव आई और चिता पर सती हो गई, जिनका मंदिर बड़े बाजार में बना हुआ है। गाँव में एक और सति किसी लड़ाई में माली समाज की महिला भी हुई थी, जिसका स्थान कॉलेज परिसर के पास बना हुआ है।

8. शीतला माता मंदिर, कैमरी - चामुंडा माता के समीप ही स्थित है, जहाँ सभी समाज के लोग शीतला अष्टमी, शादी विवाह के बाद जोड़े सहित पूजन के लिए जाते हैं।

9. बाग बाला हनुमानजी, निर्भय तालाब की पाल, विरामपुर, कैमरी।

10. जानकी माता मंदिर, जनकपुरकैमरी - भगवानजगन्नाथ की रथ यात्रा प्रति वर्ष जगन्नाथ मंदिर से रवाना होकर श्री जानकी माता मंदिर, जनकपुर तक जाती है। तीनों रथों में श्री कृष्ण, बलदाऊ, बहिन सुभद्रा विराजमान होकर जनकपुर जाते हैं, इन रथों को बारह गाँव के पंच पटेल स्वयं खींच कर ले जाते हैं, किसी जानवर को नहीं जोड़ा जाता है, यह यहाँ की जनता का भगवान कृष्ण के प्रति अटूट विश्वास और श्रद्धा का प्रतीक है।

11. पातल काड़ावत का कुआँ - भगवान जगदीश जी के मंदिर प्रागण में एक प्राचीन कुआँ स्थित है जिसे पातल वाला कुआँ के नाम

से जाना जाता है। जिसका निर्माण काडू के पुत्र पातल काडावत (जिसके वंशज वर्तमान में बाढ़ कैमरी में निवास करते है) के द्वारा करवाया गया है। इस कुएँ में खारा पानी था। भगवान श्री कृष्ण के भक्त एक महात्मा ने इस कुएँ के पानी को मीठा करने के लिए आशिर्वाद दिया एवं कई बोरी चीनी कुएँ में डलवाई, भगवाने के आर्शिवाद से इसके बाद वर्तमान तक इस कुएँ में मीठा पानी उपलब्ध है। कई बार अकाल के समय आस-पास के तालाबों, कुओं में पानी सुख गया लेकिन इस कुएँ में कभी पानी नहीं सूखा।

पूजा पद्धति

महंत - श्री मनोज कुमार शास्त्री पुत्र आचार्य श्री रामदयाल शास्त्री

मंगला आरती - सुबह पाँच बजे

बाल भोग - प्रातः 8 बजे - मक्खन मिश्री का भोग

राज भोग - 11:30 बजे अटका चावल

संध्या आरती - 7 बजे

शयन आरती - 8:30 बजे - दूध का भोग (गाय का)

नवकलेवर

उड़ीसा में जगन्नाथपुरी की तर्ज पर प्रति बारह वर्ष में प्रतिमाओं का नवकलेवर करवाया जाता है। विक्रम संवत् 1735 के बाद द्वितीय नवकलेवर विक्रम संवत 1986 (सन् 1929) में हुआ। तृतीय नवकलेवर विक्रम संवत् 2049 (सन् 1992) में हुआ। इसी समय छत का निर्माण पौष बुदी अमावस्या को करवाया गया, तत्कालीन प्रधान पुजारी कमलदास थे। मंदिर निर्माण में ईंट महाजीत ने दी थी और दरवाजे का निर्माण भूरसिंह खेडला ने करवाया था। चतुर्थ नवकलेवर विक्रम संवत् 2068 में (सन् 2011) में हुआ जिसमें महायज्ञ का आयोजन भी किया गया था।

(फाइल फोटो- नवकलेवर)

महीनों भर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। उड़ीसा से चंदन लकड़ी से सज्जित प्रतिमाएँ लायी जाती है। गर्भगृह में स्थापित करने से पूर्व नांगतलाई के पाँच आदमी हाथ (महात्मा चंद्रमादास के वंशज) लगाते हैं, बताया जाता है कि एक बार नांगतवाई वाले शुभ मुहूर्त में पहुँचने तक लेट हो गए, तो सैंकडों लोगों के प्रयास के बावजूद प्रतिमा टस से मस नहीं हुई। भगवान की इस अपार शक्ति से लोग हतप्रभ रह गये।

अटका चढ़ाना

किसी मनोकामना के पूर्ण होने पर भगवान पर प्रसाद चढ़ाया जाता है जिसे ''अटका'' कहा जाता है। उड़ीसा के पुरी में भोजशाला की तर्ज पर जगदीश धाम कैमरी में भी प्रत्येक विशेष अवसर और हर माह की अमावस्या पर अटका की प्रसादी पंगत में बैठाकर खिलाई जाती है। जिसमें चावल, बूरा और दाल का भोग लगाया जाता है। राजस्थान की कला, साहित्य और सांस्कृतिक फलक पर इस विशेष अवसर का अलहदा और विशिष्ट स्थान है। दूर दराज से पधारे हुए हजारों यात्रिगण प्रसाद ग्रहण करते है।

भाद्रभोज

भाद्रपक्ष महिने में भगवान जगदीश पर बाबा केसोराम परिवार के द्वारा सामूहिक भोज किया जाता है। भाद्रभोज में सब्जी बनाना

प्रतिबंधित है, खीर पुए की प्रसादी वितरित की जाती है।

फाइल फोटो-मिड़ाया

सामूहिक भोज

वर्ष में कम से कम एक बार पूरे क्षेत्र से रुपये/आटा/लकड़ी की उगाही की जाती है। सामुहिक खाना तैयार किया जाता है, बड़े-बड़े कड़ाहों में खीर व सब्जी तैयार किए जाते है। पूरे क्षेत्र में लोगों के द्वारा एक साथ खाना खाया जाता है। जिससे आपसी प्रेमभाव व सामाजिक समरसता बढ़ती है।

एक घाड़ के लोगों का किसी कार्यक्रम में हाथी, घोड़ा, ऊँट की सवारी, दल-बल और आतिशबाजी के साथ शिरकत करना ''मिड़ाया'' कहलाता है।

जिसमें महिलाएँ ''झेड़'' बांधकर स्वागत करती हैं। युद्ध क्षेत्र में अपने शौर्य की तर्ज पर समाज की अग्रिम पंक्ति में पंच पटेल सरदार और अन्य लोग सेना की तरह व्यवस्थित पंक्तिबद्ध आगे बढ़ते है,

हाथी, घोड़ा, रथ, तोप, बंदूकें साथ लेकर हर्ष के साथ चढ़ाई करते है। आयोजनकर्ता दल दूसरी तरफ से महिलाओं के सर पर 8-10 मटकियाँ रखकर आगवानी करते हैं... इस स्वागत वेला में मेहमान पक्ष आगे बढ़कर मटकियाँ उतारता हैं सम्मान ग्रहण करता है तदोपरांत जयकारों के साथ प्रसाद ग्रहण करता है। इस अनोखी परम्परा को आज भी संजोए हुए हैं। आधुनिकता के चलते धीरे-धीरे कमीं आती जा रही है लेकिन फिर भी कम से कम साल में एक बार बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया जाता है जिसमें यह दृश्य आज भी देखा जा सकता है। अधिकांशतः इसका आयोजन जेष्ट माह में होता है, जिससे एक बड़े क्षेत्र में व्यवस्था की जा सके।

मनोरंजन के साधन

मानव के मन का आंतरिक प्रमोद जब आनन्द के अतिरेक से उद्वेलित होता है तो उसके अंग-अंग में स्पन्दन होने लगता है। इस स्पन्दन के प्रगतिकरण का दूसरा नाम नृत्य है। जब यह लोक संस्कृति को स्वर देता है तो इसे लोक नृत्य के नाम से जाना जाता है। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में कला की अपनी एक विशेष शैली और पद्धति है। जिसे लोककला के अलावा भी परम्परागत का एक अन्य रूप है। जो कि अलग-अलग क्षेत्रों में और देहात के लोगों में प्रचलित है।

लोकगीत

कैमरी गाँव में लोक गायन करते हुए

इस क्षेत्र में विशेष गायन शैली का प्रचलन है। इसमें रामायण, महाभारत और अनेक प्रेरणादायक कहानियाँ राजा मोरध्वज (गढ़मोरा) की कहानी, नारायणी माता की कहानी (गढ़मोरा) श्रवण कुमार की कथा, राजा भर्तृहरि की कथा, आल्हा-उदल के किस्से अनेक वाद्य यंत्रों झांझ, मंजीरा, ढोलक आदि का प्रयोग किया जाता है। चालीस पचास लोगों के गुट बनाकर करतल ध्वनि के साथ प्रस्तुति दी जाती है। इस गायन की शुरूआत चैत्र और कार्तिक मास में फसल की कटाई के साथ शुरू हो जाती है।

रण-नृत्य

गुर्जर नेता कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला कहते हैं - ''पेशावर के राजा जयपाल खटाना के पास एक ऐसी ब्रिगेड थी जो ध्वनि के जरिए दुश्मन को डराती थी। इसमें बिना हथियारों के जंग का माहौल जीवंत किया जाता था। मुझे इस कला पर फक्र है, मैंने खुद भी इसमें भाग लिया है''

भारतीय उपमहाद्वीप में फैले गुर्जर समुदाय रण-कौशल पर आधारित, सदियों पुरानी अपनी नृत्य विधा को सहेज कर रखा है, चाहे इसका दायरा पूर्वी राजस्थान के कुछ ज़िलों में सिमट कर रह गया है।

गुर्जर परंपरा के अनुसार ये समुदाय अपनी इस नृत्य शैल्ली को युद्ध के मैदान में आज़माता रहा है। किसी भी आक्रमण की संभावना होने पर समाज के कर्णधारों के द्वारा युवाओं में जोर उत्पन्न करने के लिए इस नृत्य का आयोजन किया जाता हैं। चंबल के बीहड़ और पर्वत की तलहटी में जमा होकर गुर्जर अपने मुँह से ऐसे स्वर निकालते हैं जैसे- हथियारों से सुसज्जित कोई सेना युद्ध का आहवान कर रही हो।

क्या है गुर्जर रणनृत्य?

गुर्जर संस्कृति के जानकार डॉक्टर रूप सिंह इतिहास में झाँक कर कहते हैं, ''ये नृत्य युद्ध के भावों को नृत्य के ज़रिए पेश करने की कला है, जब विदेशी हमलावरों ने दर्रा ख़ैबर से हिन्दुस्तान पर हमला किया तब गुर्जर दो-दो हज़ार की संख्या में एकत्र हुए और नाच के ज़रिए उन्होंने ऐसे भाव पैदा किए कि दुश्मन भयभीत हो गया।''

रणनृत्य करते हुए गुर्जर समुदाय के लोग

इस नृत्य की प्रक्रिया के बारे में बताते हुए डॉक्टर रूप सिंह कहते हैं, "हज़ारों की संख्या में जमा होकर नाच के साथ आवाज़ निकाली जाती है जिसे फटकार कहते हैं। जब सभी एक साथ नीचे लपकते हैं तो उसे लचक कहा जाता है। जब सभी एक साथ नीचे बैठ जाते हैं तो उसे मचक बोलते हैं। ये तीनों युद्ध नृत्य की क्रियाएँ मानी जाती हैं।"अब ये कला केवल राजस्थान के चंबल क्षेत्र में करौली, सवाई माधोपुर और भरतपुर जैसे ज़िलों तक सीमित होकर रह गई है। लेकिन विशेष अवसर पर जगदीश धाम कैमरी में आज भी कम से कम साल में दो बार युवाओं में उत्साह बढ़ाने के लिए आयोजित किया जाता हैं।

कैप्टन हरप्रसाद तंवर कहते हैं, "ये नृत्य हमें युद्ध के मैदान में एकता के सूत्र में पिरोता रहा है। इस नृत्य के भाव ऐसे हैं कि दुश्मन भयभीत होकर भाग खड़ा होता है। हमें हाल के आंदोलनों में भी इससे बड़ी मदद मिली है।"

एक अन्य सेवानिवृत्त अधिकारी कैप्टन भीम सिंह गुर्जर एवं केमरी सरपंच अतराज गुर्जर कहते हैं, "हम तो ये मानते हैं कि ये आदिकाल से चला आ रहा है। यह एक रणकौशल है। ये हमें शौर्य भाव से भरता है क्योंकि जो पंक्तियाँ ऊँचे-ऊँचे दोहराई जाती हैं तो हमारे पुरखों के गौरव गान को बयान करती हैं।"

पेशावर के जयपाल खटाना का ज़िक्र "आश्चर्य है कि गुर्जर कहते हैं इस कला की नुमाइश के लिए मई और जून के तपिश भरे

महीने बेहतर माने जाते हैं।''

नादान सिंह खटाना के मुताबिक, ''इतिहास में दर्ज कि पेशावर में जब गुर्जर राजा जयपाल खटाना की हुकूमत थी और महमूद ग़ज़नी ने हमला किया तब गुर्जरों ने जमा होकर इस युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया था।''

जम्मू-कश्मीर के गुर्जर देश चेरीटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष मसूद चौधरी कहते हैं, ''इस नृत्य में गीत संगीत है, युद्ध की गर्जना है, कहीं कोलाहल है तो कहीं गायन में कर्णप्रिय सुर भी.....''

गोंठ

कैमरी परिक्षेत्र के साथ साथ पूर्वी राजस्थान में गोंठ, गायन का प्रचलन है। इसकी उत्पत्ति चौबीस बगड़ावत वीरों की कहानियों के गायन से शुरू हुई। देवनारायण जी सवाई भोज, भूणाजी मेहाजी, शूरपाल, चंदीला, कालिस देव, बाबू महाराज और ऐलोदी गुर्जरी की वीरता की कहानियों को गाया जाता है। गोंठ, गायन में गाँव के तीस चालीस लोगों द्वारा गान किया जाता है। जिसे मेडिया के द्वारा हेला, लगाकर सम्बोधन किया जाता है। गोंठ विशेषतः भाद्रपक्ष माह में एक-दूसरे गाँवों में जाकर गाई जाती है। गोंठ गायन को आपसी भाईचारे और सामाजिक समन्वयता का प्रतीक माना जाता है।

रसिया

पूर्वी राजस्थान के साथ साथ आगरा, मथुरा, भिण्ड, मुरैना क्षेत्र में रसिया गायन बहुतायत मात्रा में प्रचलन है। रसिया के माध्यम से प्रेम की आन्तरिक अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया जाता है। कुंवारी लडकियाँ अच्छे वर की इच्छा रसिया के माध्यम से जाहिर करती है वही शादीशुदा नव विवाहिताऐं पति वियोग और मचलते यौवन की आत्माभिव्यक्ति को रसिया के माध्यम से प्रस्तुत करती है।

''पापा कैमरी में दीजो बनजाऊॅ जान खटाने की।

पापा कैमरी में होगी ससुराल खटाने की बनूँ गौरी''

''लेटर पढवाडी ने भेजो रै याकी भारी- भारी आवें याद....

जैसी अनेक रसिया गाये जाते है।

धार्मिक व्यंग्य के रसिया प्यारसिंह भगोरा व नवयोवन की आत्माभिव्यक्ति के रसिया गायन के लिए भूपेन्द्र खटाना तेसगाँव प्रचलित नाम है।

कीर्तन दंगल

ऐतिहासिक धार्मिक कथाओं के व्याख्यान मंच के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें पन्द्रह बीस लोगों की टीम होती है जिसे ''जोठ'' कहते है। इसके मुखिया को मेडिया कहते है। ढण्ड के पुरा (कैमरी) के देवेन्द्र, अतरसिंह- बेदराम की जोठ प्रसिद्ध है।

त्यौहार

तीज त्यौहार और अन्य उत्सवों में जीवन का राग रंग देखने को मिलता है। यहाँ के लोगों का पहनावा उन्हें विशिष्टता प्रदान करता है। राजस्थान एक भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधता का प्रदेश है। इसकी माटी में लोकगीतों की मिठास है तो इसकी हवा में मेलों/उत्सवों का उल्लास है।

फाइल फोटोः पितृतर्पण करते हुए गुर्जर समुदाय के लोग।

हरियाली तीज, हरियाली अमावस्या, गणगौर की सवारी, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, दशहरा, दीपावली और होली अत्यंत धूमधाम से मनाई जाती है। दीपावली के दिन गुर्जर समुदाय के लोग एक स्थान पर एकत्रित होकर मानव श्रृंखला बनाते हुए हाथ में डाब लेकर पितृ तर्पण अर्पित करते है। खास विशेषता को संजोकर रखने में खटाना गुर्जरों की अहम भूमिका है। खटाना परिवार के लोग श्री जगदीश मंदिर के पीछे नरभा तालाब की पाल पर पितृ तर्पण करते हैं।

गोवर्धन पूजा

दीपावली से अगले दिन गोवर्धन पूजा की जाती है। सम्पूर्ण गाँव की औरतें गोबर से कछुआकार का पैनारेमा बनाते समय ''गोवर्धन अधक मलूक बनायो राधा रानी ने'' गीत गाती है। जो कि ब्रज क्षेत्र से जुड़े अपनत्व को दर्शाती हैं। मोरपंख, बिलौनी आदि इसमें टांग दी जाती है। गाँव की महिलाएँ घर पर मावे से बनाई मिठाईयों, खीर पुएें और मक्खन दही आदि से पूजा करती है। गाँव के लोग एकजुट होकर "मानसी गंगा श्री हरदेव गिरवर की परिक्रमा देओं,'' गाते हुए परिक्रमा करते है। एक-दूसरे को गले लगाते हैं, महिलाएँ भजन गाती है और एक-दूसरे को हल्दी का तिलक लगाते है। तदोपरांत 'हीड़ो' (खुशी में गाया जाने वाला लोक गीत) पुरुषों के द्वारा गाया जाता है।

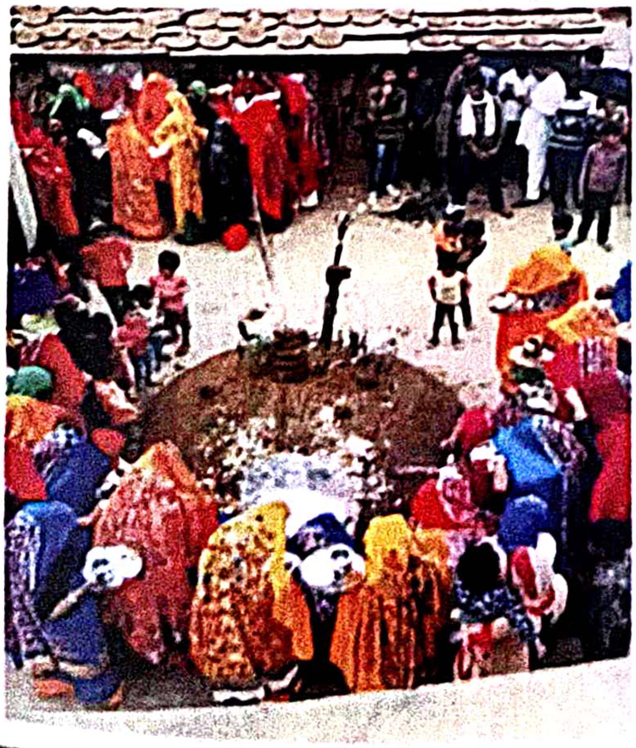

गोवर्धन पूजा करती हुए गुर्जर समुदाय की महिलाएँ

गोधन पूजा और गोधन गीत

गोवर्धन अथवा गोधन पूजा का सम्बन्ध भगवान कृष्ण से हैं, भारत की शास्त्रीय परम्पराओं के अनुसार गोकुलवासियों को, भगवान इंद्र जनित बारिश और बाढ़ से, बचाने के लिए भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपने बायें हाथ की कनकी उंगुली पर उठा लिया था और सभी गोकुलवासियों को पशुओं सहित उसके नीचे शरण देकर उनकी रक्षा की थी, तभी से गोवर्धन पर्वत की हर वर्ष पूजा की जाती हैं, भारत के अहीर, गुर्जर और जाट आदि किसान-पशुपालक चरवाहे समुदायों में यह त्यौहार विशेष लोकप्रिय हैं। ... डा. सुशील भाटी

इतिहासकार केनेडी के अनुसार मथुरा के कृष्ण की बाल लीलाओं की कथाओं के जनक गुर्जर ही हैं, मथुरा इलाके में प्रचलित लोक मान्यताओं के अनुसार कृष्ण की प्रेमिका राधा बरसाना गाँव की गुर्जरी थी और कृष्ण को पालने वाले नन्द बाबा और यशोदा माता भी गुर्जर थे, इबटसन कहता हैं कि पंजाब के गुर्जर नन्द मिहिर को अपना पूर्वज मानते हैं, रसेल के अनुसार मालवा इलाके की बड-गुर्जर खाप अपने को दूसरे गुर्जरों से बड़ा मानती हैं क्योंकि वो अपने उत्पत्ति कृष्ण से मानते हैं, गुर्जरों और राजपूतों में पाए जाने वाले भाटी गोत्र की वंशावली भगवान कृष्ण के वंशज भाटी तक जाती हैं।

दक्षिणी एशिया में रहने वाला गुर्जर कबीला मूलतः एक पशुपालक अर्ध- घुमंतू चरवाहा समुदाय रहा हैं, आज भी कश्मीर,

हिमाचल और उत्तराखंड के घुमंतू गुर्जर चरवाहे मुख्यतः भैंस पलते हैं, इस त्यौहार में घरों में गाय-भैंस के गोबर से गोवर्धन पर्वत की देव रूपी आकृति बनायी जाती हैं, जिसे गोधन कहते हैं, गोधन के ऊपर गोबर के बने हुए गाय-भैंस और ग्वाले भी रखे जाते हैं, गोधन के साथ हंडिया-पारे और दूध बिलोने की रही भी रखी जाती हैं, घर-कुनबे-गाँव के लोग ग्वाले के रूप में इकट्ठे होकर गोधन के दोनों ओर खड़े हो जाते हैं, तब गोधन गीत गाया जाता हैं, उसके बाद गोधन की परिक्रमा करते हैं,

कैमरी_जगदीश धाम

पान्हौरी के ग्वाल बाल

हिंडौन-महावीरजी मार्ग पर कैमरी में जगदीश धाम है। यहां जगन्नाथ जी स्वरूप में प्रतिमाएं हैं। पुजारी हरिमोहन शर्माजी ने बताया कि यहां कभी केर का बड़ा जंगल था। जिसका उल्लेख पद्म पुराण में है। बताते हैं अध्ययन यात्रा के दौरान श्रीकृष्ण के साथ ग्वाल बाल भी आए। श्रीकृष्ण ने केर के जंगल को देख कहा कि [illegible]...। अर्थात बलराम यह केर का जंगल कितना प्रिय है। एक रात्रि विश्राम के बाद ग्वालबालों को छोड़ कर उज्जैन को रवाना हो गए। इनमें कुछ ग्वाल बाल टोंक जिले के पान्हौरी गांव के भी थे। इसकी पुष्टि श्रीकृष्ण पथ गमन की कमेटी से जुड़े पूर्व राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम ने भी की है।

गोधन गीत

गोधन माडू रे तू बड़ों
तोसू बड़ों ना रे कोये
गोधन उतरो रे पार सू
उतरो गढ़ के रे द्वारे
कल टिको हैं रे जाट क
तो आज गूजर के रे द्वारे
उठके सपूती रे पूज ल
गोधन ठाडो रे द्वारे
ठाडो हैं तो रे रहन द
गौद जडूलो रे पूते
गोधन पूजे राधिका
भर मोतियन को रे थारे
एक जो मोती रे गिर गयो
तो ढूंढे सवरे रे ग्वारे
कारी को खैला बेच क
ओझा लूँगी रे छुटाए
इतने प भी न छुटो
तो बेचू गले को रे हारे

कारी-भूरी रे झोटियाँ
चलती होड़ा रे होडे
कारी प जड़ दू रे खांकडो
भूरी प जड़ दू रे हाँसे
कैसो तो कई य रे भोजला
कैसी वाकि रे मोछे
भूरी मोछन को रे भोजला
हिरन सिंगाडी रे आँखे
बंगरी बैठो रे मैमदो
मुड मुड दे रो रे असीसे
अजय विजय सुरेश इतने
बाढियो
गंग-जमन के रे असीसे
छोटे-बड्डे इतने रे बाढियो
गंग-जमन के रे नीरे

जगदीश धाम कैमरी के मंदिर प्रागंण में 12 गाँव के ग्वाल-बाल एक साथ मिलकर गोवर्धन पूजा करते हैं। इस अवसर पर हजारों की संख्या में महिला पुरुष एकत्रित होते हैं। भगवान का प्रसाद बाँटा जाता है। जिसमें प्रमुखतः माखन-दही वितरित किया जाता हैं।

होली

परस्पर प्रेम-त्याग से उपजी मन मस्तिष्क की सहज भावना घर, परिवार, समाज और राष्ट्र को एक सूत्र में सशक्त करते हुए सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक बन जाती है। यह परम्परा पीढ़ी-दर-पीढ़ी युगयुगीन बन जाती है। यह अवश्य है कि समय काल परिस्थिति के अनुरूप इसमें परिवर्तन अवश्य संभावी है लेकिन संस्कृति के मूल तत्त्व की जड़ें और घनी हो जाती है।

जगदीश धाम चौक में होली पर्व

कैमरी परिक्षेत्र में खेली जाने वाली होली की खास विशेषता है। ब्रज में खेले जाने वाली होली की तर्ज पर ही इस क्षेत्र कोड़ेमार होली खेली जाती है। धूलेण्डी के दूसरे दिन द्वितीया को जगदीश चौक में खटाना परिवार के सात पीढ़ी के महिला पुरुष अलग अलग खंदों में भाभियों से होली खेलते है। जगदीश चौक का ये नजारा अद्भुत और मनोरम लगता है। इस क्षेत्र को पूरे राजस्थान में खास पहचान दिलाता है। शाम छह बजे झाँकी निकाली जाती है जिसे रंदूकड़ी कहते है।

कृषि

कैमरी परिक्षेत्र में काली मिट्टी है जो बेहद, उपजाऊ मानी जाती है। लावायुक्त समृद्धि व सम्पन्नता में अहम योगदान हैं क्षेत्र में क्षेत्र की मुख्यतः पैदा की जाने वाली फसलों में सरसों, बाजरा, चना, गेहूँ, तिल है।

जल की कमी के कारण सिंचाई के साधन भी सीमित मात्रा में है। क्षेत्र की जीवन रेख फतेहसागर बाँध को माना जाता है। अन्य छोटे-छोटे तालाब होदाहेली का तालाब, ढण्ड का तालाब, विरमपुरिया का तालाब, जालाको तालाब, नया तालाब और बड़े-बड़े खेतों में टाँके बनाकर सिंचाई और पेयजल की आपूर्ति की जाती है। कुऐं, बोरबेल, ट्यूबबैल एवं अन्य सिंचाई के संसाधन है।

पशुपालन

क्षेत्र में बहुतायात मात्रा में गुर्जर परिवार है जो मुख्यतः कृषि और पशुपालन का काम करते है। जीवनयापन का मुख्य व्यवसाय पशुपालन हैं। भैंस, गाय, बकरी, भेड, ऊँट और शाही परिवारों में घोड़े भी पाले जाते है। अधिकांश मात्रा में गायें पाली जाती हैं। गायों का विशेष महत्त्व हैं। दशहरे एवं दिपावली पर गायों की पूजा की जाती हैं। गायों को रंगोली एवं फूल-मालाओं से सजाया जाता हैं। क्षेत्र में जिस स्थान पर ग्वाल-बाल रहते थे। उस क्षेत्र को आज भी गोपालपुरा के नाम से जाना जाता हैं और जहाँ गायों को रखा जाता था। उस क्षेत्र को धमाड़ी, जो गुवाड़ी शब्द का अपभ्रंश हैं। सिंघनवाड़ी के हार में अधिकांश मात्रा में शेर एवं जंगली जानवरों का बाहुल्य बताया जाता हैं। जिससे गायों की रक्षा करना बड़ा कठिन माना जाता था। आज भी यहाँ हिरण, नीलगाय, खरगोश, सियार आदि जंगली जानवर पाये जाते हैं।

विशेष खाद्यान्न

क्षेत्र में विशेषतः गेहूँ, बाजरा, चावल, अरहर, जौ, तिल से बनी भोज्य सामग्री ग्रहण की जाती हैं। दूध एवं दूध से बने पदार्थों - दही, मक्खन, घी, छाछ-लस्सी, दूध-राबड़ी के अलावा मिष्ठान यथा खोवा, मावा, खीर-मोहन का अधिक मात्रा में उपयोग किया जाता हैं। क्षेत्र में घाट की राबड़ी (जौ के दलिया को छाछ में उबाल कर बनाया

जाता हैं।) एवं गोचई की रोटियाँ (जौ, गेहूँ एवं चना की सम्मिलित आटे की बनी रोटियाँ) अधिक प्रचलित हैं।

रीति रिवाज और परम्पराएँ

मांगलिक पर्वों एवं त्यौहार पर पारम्पारिक वेशभूषा में कलश यात्रा

अढ़ाई पाट का लूगड़ा (विशेष प्रकार की ओढ़नी) है जिस पर विभिन्न फूल पत्तियाँ बेल, जानवर और प्राकृतिक दृष्यों कों मंडाया जाता है। दाँतों में चोंप लगाना, हाथों पर नाम गुदवाना विशेष शौक है। आभूषणों में सीतारानी, कुंडल, पायजेब, हथफूल, करधनी, बाजूबंद, बंडी, सांत तोडिया, बीछिया, मंगलसूत्र, कंठी, चुटकी आदि उपयोग में लाए जाते है। समय की परिवर्तन के साथ-साथ आभूषणों

को पहनने का शौक कम हो रहा है। पारम्परिक परिधान में पुरुषों को कान में बाली पहनने का शौक है। महिलाएँ पहनावे में लूगड़ा, शर्ट लहंगा, रंग बिरंगी धोती (सर पर ओंढ़ी जाती है) ब्लाउज, मुख्य परिधान है। क्षेत्र में आमतौर पर बाल-विवाह प्रचलित थे, समय के अनुसार बदलाव जरूर आया। खाप पंचायत के द्वारा बाल-विवाह पर प्रतिबंध लगाया गया है। दहेज प्रथा का प्रचलन ज्यादा है। जिस पर रोक लगाने के लिए कई बार असफल प्रयास भी किए गए है।

अंकमाला

बारातियों को अंकमाला करते हुए।

क्षेत्र की खास विशेषता है। जिसमें शादी के दिन बारात को एक स्थान पर एकत्रित कर मेहमानों की तिलक लगाकर आगवानी की जाती है। समाज के लोगों को एक दूसरे से रूबरू होने का अवसर मिलता है।

रंग-बिरंगी पगड़ियाँ, रौबदार मूँछें, विशालकाय शरीर वाले, मोटी आँखों वाले गुर्जर समुदाय की खास विशेषता प्रचलित है। इस दौरान हँसी मजाक व्यग्य पूर्वक सुनाए जाते है। जिसे लोक प्रचलन में ठट्ठे कहा जाता है।

मांडणे

आँगन में महिलाओं के द्वारा गेरूआ और खड़ी भिगोकर आकर्षक कलात्मक आकृतियाँ बनाई जाती है। पशु, पक्षी, फूल, स्वास्तिक, बेल पत्तियाँ, जानवरों के चित्र बनाए जाते है।

अनाज रखने की मिट्टी की कोठियाँ, अनाज की कोठियों पर काली मिटटी के साथ तूड़े की भूसी को मिलाकर गारे से स्त्री-पुरुष, बालरूप कृष्ण, फूल-पत्तियाँ, घोड़े, हाथी, बतख, मोर, तोता-मैना, पदचिह्न स्वास्तिक के चित्र उकेरे जाते है। चटकीले रंग भरकर चित्रों को आकर्षक बनाया जाता है।

राष्ट्र सेवा में योगदान

ऑर्डर ऑफ़ ब्रिटिश इंडिया (O.B.I.) सूबेदार मेजर ऑनरेरी कैप्टन भैरों सिंह खटाना (1868-1928)

सूबेदार मेजर ऑनरेरी कैप्टन भैरों सिंह खटाना का जन्म सन् 1868 में ग्राम खेड़ली कैमरी, तहसील - नादौती, जिला - करौली, राजस्थान के श्री हरगोविंद सिंह खटाना के परिवार में हुआ।

आपने फौजी प्रशिक्षण लाहौर में लिया। तद्पश्चात सैंकण्ड बटालियन फ्रंटियर फ़ोर्स में भर्ती हुए, सन् 1930 में कैप्टन भैरों सिंह खटाना 4 नायक 18 जवानों के साथ सोमालिलैंड में एक माउण्टेन घुड़सवार इंफेंटरी का हिस्सा बन कर गए तथा 19 दिसंबर 1903 को जिन्दबली की लड़ाई में सिपाही धन्नाराम गुर्जर को गिरते हुए और बहुत कठिनाइयों में फँसा हुआ देखा तो भैरों सिंह अकेले ही वापस मुड़े और दुश्मन के घुड़सवार दस्तों को चीरते हुए, भारी गोलीबारी की परवाह न करते हुए सिपाही धन्नाराम को अपने घोड़े पर लाद कर युद्ध के मैदान से बाहर निकाल लाये। उसके बाद वापस जाकर दुश्मन दस्ते का सफाया कर दिया।

इनकी इस बहादुरी के लिये इण्डियन ऑर्डर ऑफ़ मेरिट (O.I.M.) मैडल दिया गया। बाद में इसी लड़ाई के दौरान और अधिक शूरवीरता दिखाने के कारण श्री भैरों सिंह खटाना को ऑर्डर ऑफ़ ब्रिटिश इंडिया (O.B.I.) पदक से विभूषित किया गया।

इस बहादुरी के लिए अंग्रेज़ सम्राट ने श्री भैरों सिंह खटाना से जब उनकी उत्कंठ इच्छा पूछी तो युद्धपुरोधा श्री खटाना ने गुर्जरों को सेना में भर्ती कराने के लिये सम्राट से इजाजत पायी। प्रसन्न सम्राट ने गुर्जरों के लिये सेना में 40 प्रतिशत भर्ती के आदेश कर दिए। इस महान शूरवीर को अपनी बहादुरी, कौशल और कर्त्तव्य परायणता के फलस्वरूप उनकी तीन पीढ़ियों को लगातार पेंशन मिलती रही।

जयपुर महाराज ने श्री खटाना को ''राजस्थान-केसरी'' की उपाधि देकर विभूषित किया तथा 100 रुपये प्रतिमाह पुरस्कार स्वरूप पेंशन जीवित रहने तक भेजते रहे।

ऐसे वीर की अमर गाथायें ही हमारी प्रेरणा का स्त्रोत हैं। आज आपके परिवार में से 4 पौत्र और 6 प्रपौत्र भारतीय सेना में विभिन्न रेजिमेंट में भर्ती होकर राष्ट्र सेवा में अपनी अहम् भूमिका निभा रहे हैं। भैरोंसिंह खटाना को सेना में भर्ती खुलवाने का श्रेय दिया जाता है। वीर प्रसूता कहलाने वाली इस पवित्र धरा पर आज भी भारतीय सेना कि जल, थल, वायु तीनों सेनाओं में हजारों सैनिक अपनी सेवाएँ दे रहे है। आजाद हिंद फौज के साथ-साथ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, भारत- चीन की लड़ाई 1962, भारत-पाक लड़ाई 1965, भारत पाक लड़ाई 1971-72, कारगिल की लड़ाई में सैनिकों ने भाग लिया, आज भी फौजी गाँव में वीरता के किस्से सुनाते हैं। क्षेत्र से सैनिक जिन्होंने सेना में सेवारत रहते अपना सर्वोच्च बलिदान दिया शहीद नेतराम खटाना (मेंढे का पुरा कैमरी), शहीद ओमप्रकाश खटाना (इब्राहिमपुर, कैमरी), रामवीर खटाना (ढण्ड का पुरा कैमरी), कैलाश खटाना (भूरे का पुरा कैमरी), वीरेंद्र खटाना (भूतों का पुरा कैमरी), श्री रतन सिंह खटाना (ढण्ड का पुरा), शहीद सियाराम खटाना (तेसगाँव कैमरी), धर्मवीर खटाना (ढण्ड का पुरा कैमरी) आज भी अपनी राष्ट्रभक्ति का प्रमाण प्रस्तुत करते है। मीठा लाल

छाबड़ी (योगी) पुत्र श्री नानगा राम छाबड़ी निवासी - कैमरी, 5 राजपूत में कैमरी में जगदीश चौंक ओपन भर्ती में सेलेक्ट (सिपाही) 1962 चीन भारत युद्ध 1965, 1971 भारत-पाक युद्ध लड़े। अदम्य साहस के लिए तीन मेडल प्राप्त किए। द्राक्ष सेक्टर में 1966 में, लगभग 100 मीटर गहरे गर्त में गिरने के बाद आधी रात के समय रस्सी के सहारे स्वयं ही ऊपर चढ़कर जीवित बच गए। 1971 में जांघ में गोली लगने से घायल, पीले पत्र जारी हो गए, परंतु 3 दिन बाद बंकर से निकल कर सेंटर आ गए।

2 फरवरी, 2025 को राजस्थान के मुख्यमंत्री श्रीमान भजनलाल जी शर्मा, गृह राज्य मंत्री श्रीमान जवाहर सिंह बेढम ने बसंत पंचमी मेले के अवसर पर रथ यात्रा की शोभा बढ़ाई, भगवान की महाआरती में भाग लिया, पूजा अर्चना की, क्षेत्र की सुख समृद्धि के लिए प्रार्थना की। तत्पश्चात जनकपुर पर स्थित माँ जानकी देवी मंदिर प्रांगण में हजारों की संख्या में उपस्थित किसान सम्मेलन को संबोधित किया। क्षेत्र के विकास की अपार संभावनाओं (श्रीकृष्ण गमन पथ) शैक्षिक विकास (बालिका आवासीय विद्यालय) गौ रक्षा के लिए चिकित्सालय की घोषणा की, जिसका जोरदार तालियों के द्वारा लोगों ने स्वागय किया। श्रीमान जवाहर सिंह जी बेढम साहब का लोकप्रिय भाषण भी खूब वायरल हुआ जिसमें **''ऊँचे टीले पे जगदीश बगल में टंकी, पिताजी मोय कैमरी में दीजो''** ने लोगों को खूब लुभाया।

जिसका असर भी यहीं हुआ कि मेले के अगले दिन क्षेत्र में सैंकडों सगाईयाँ हुई। क्षेत्रीय विकास धरातल पर लाने के लिए राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री ओंकार सिंह लखावत और जवाहर सिंह बेढम साहब ने पुनः दौरा किया, अपार संभावनाओं के लिए अवसर तलाशें, रोजगार के अवसरों को संज्ञान में लेकर जनसमूह को संबोधित किया।

श्री जगदीश धाम कैमरी में विकासोन्मुखी कार्यों बालिका आवासीय विद्यालय, पशु चिकित्सालय एवं जगदीश धाम मंदिर (श्री कृष्णा गमन पथ) विकास की अपार संभावनाओं को धरातल पर उतारने का बहुद्देशीय कार्य माननीय मुख्यमंत्री महोदय राजस्थान सरकार, गृह राज्य मंत्री माननीय जवाहर सिंह बेगम एवं हमारे आदर्श, मार्गदर्शक एवं खटाना परिवार के लाडले माननीय उप-निदेशक (शिक्षा विभाग) नादान जी खटाना, बाढ़ कैमरी की दूरगामी सोच का प्रतिफल हैं, अपार संभावनाओं को संजोए सैंकडों करोड की इन योजनाओं से जगदीश धाम कैमरी विश्व स्तरीय दृष्टिपटल पर स्थापित होगी, जिससे रोजगारोन्मुख, शैक्षिक उन्नयन एवं पशुओं को त्वरित इलाज के साथ साथ उन्नत किस्म के पशुओं की नस्ल सुधार में मील का पत्थर साबित होगी। बारह गाँव खटाना परिवार के इस भव्य मंच पर बहुउद्देशीय योजनाओं की सौगात माननीय उप निदेशक नादान जी खटाना के निर्देशन में धरातल पर बहु-आयामी परिवर्तन लाने में

हम और हमारी आगामी पीढ़ियाँ आपके इन प्रयासों की ऋणि रहेगी, पहली बार किसी गाँव में इतनी अच्छी योजनाएँ और वो भी एक साथ लागू करवाना आपके संघर्ष को दर्शाती हैं। भव्य मंदिर सहित अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित सैंकडों धर्मशालाएँ, मनमोहक गार्डन, आश्रम, चिकित्सालय, पशु चिकित्सालय, कालेज परिसर, बालिका आवासीय विद्यालय, निःशुल्क पुस्तकालय, भव्य मंच, सभागार भवन, ठाकुर जी, देवनारायण भगवान मंदिर, बालाजी मंदिर, जानकी माता मंदिर और चौराहे पर खडी वीर सपूतों की प्रतिमाएँ साल पर पर्यटकों का मनमोहती रहेंगी, योजनाओं को धरातल पर उतारने के लिए जगदीश धाम मंदिर ट्रस्ट कमेटी और श्रीमान नादान जी खटाना साहब का भागीरथी प्रयास अद्वितीय है।

माननीय भजन लाल शर्मा, मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार
श्री जगदीश मन्दिर का दर्शन लाभ प्राप्त करते हुए।

माननीय भजन लाल शर्मा, मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार एवं
माननीय जवाहर सिंह बेढ़म, गृह मंत्री, राजस्थान सरकार जगदीश जी
के बसंत पंचमी मेले पर पूजा अर्चना करते हुए।

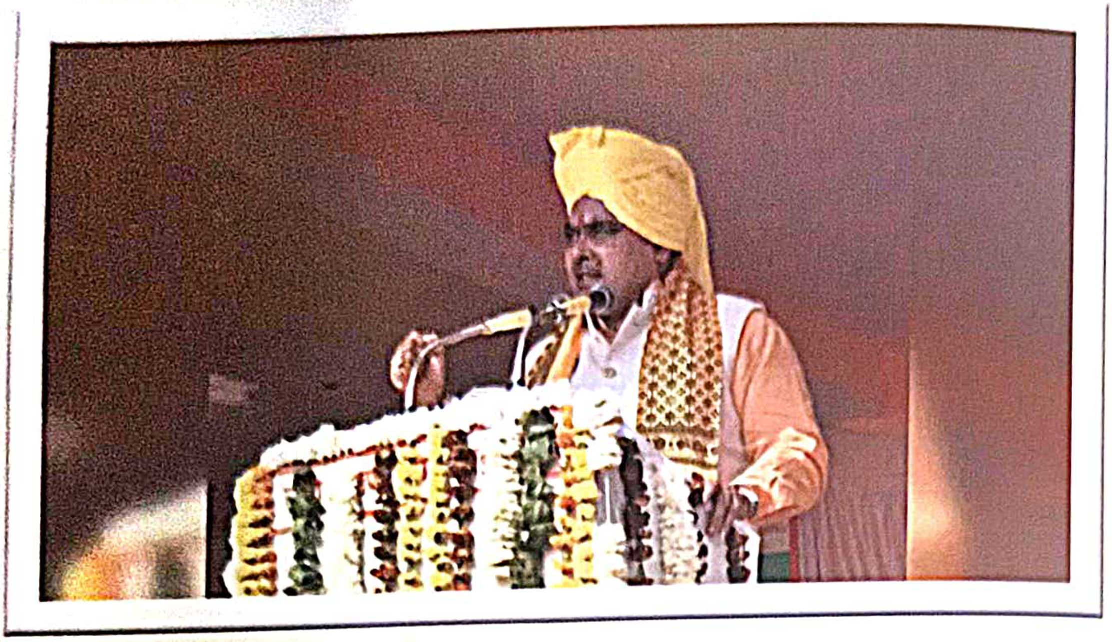

माननीय भजन लाल शर्मा, मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार
जगदीश जी के बसंत पंचमी मेले पर
श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए।

जगदीश जी के बसंत पंचमी मेले पर माननीय भजन लाल शर्मा,
मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार को मुख्यमंत्री आवास पर
निमंत्रण देते हुए कमेटी के सदस्य

लेखक परिचय... ॥

[illegible]

[illegible] श्री [illegible] खटाना, निवासी - [illegible]का पुरा [illegible]

[illegible] शिक्षा [illegible] से ही प्राप्त करने के बाद आप उच्च शिक्षा के लिए कोटा विश्वविद्यालय, राजस्थान विश्वविद्यालय और उदयपुर विश्वविद्यालय में रिसर्च स्कालर रहे। प्रथम प्रयास में नेट जेआरएफ और प्रथम प्रयास में ही व्याख्याता बनकर क्षेत्र से पहली बड़ी उपलब्धि हासिल की। वर्तमान में आप डांग क्षेत्र में शिक्षा के साथ [illegible] मुद्दों पर कहानी, दहेज का दंश, फौजिन एवं चीत्कार, [illegible] कविताओं के साथ-साथ क्षेत्र में सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर समाज के युवाओं का मार्गदर्शन कर रहे है।

श्री [illegible]

- [illegible], एम.ए. (इतिहास, अंग्रेजी) B.Ed.
- पिता - श्री [illegible] लाल
- निवासी - बस स्टेण्ड कैमरी
- जन्म दिनांक - 01/07/1977
- [illegible] - रा.उ.मा.वि. कैमरी में।
- स्नातक - Govt. College Gangapur City, MDS

वीरेंद्र सिंह व्याख्याता

पिता का नाम श्री भोंरयाराम खटाना, निवासी - ढण्डका पुरा कैमरी।

प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही प्राप्त करने के बाद आप उच्च शिक्षा के लिए, कोटा विश्वविद्यालय, राजस्थान विश्वविद्यालय और उदयपुर विश्वविद्यालय में रिसर्च स्कालर रहे। प्रथम प्रयास में नेट जेआरएफ और प्रथम प्रयास में ही व्याख्याता बनकर क्षेत्र से पहली बड़ी उपलब्धि हासिल की। वर्तमान में आप डांग क्षेत्र में शिक्षा के साथ आप ज्वलंत मुद्दों पर कहानी, दहेज का दंश, फौजिन एवं चीत्कार, वो वीर था शायद कविताओं के साथ-साथ क्षेत्र में सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर समाज के युवाओं का मार्गदर्शन कर रहे है।

श्री हरदयाल योगी

- छाबड़ी, एम.ए. (इतिहास, अंग्रेजी) B.Ed.
- पिता - श्री कंचन लाल
- निवासी - बस स्टेण्ड कैमरी
- जन्म दिनांक - 01/07/1977
- 10वीं - रा.उ.मा.वि. कैमरी से।
- स्नातक - Govt. College Gangapur City, MDS

वीरेंद्र सिंह व्याख्याता

पिता का नाम श्री भोंरयाराम खटाना, निवासी - ढण्डका पुरा कैमरी।

प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही प्राप्त करने के बाद आप उच्च शिक्षा के लिए, कोटा विश्वविद्यालय, राजस्थान विश्वविद्यालय और उदयपुर विश्वविद्यालय में रिसर्च स्कालर रहे। प्रथम प्रयास में नेट जेआरएफ और प्रथम प्रयास में ही व्याख्याता बनकर क्षेत्र से पहली बड़ी उपलब्धि हासिल की। वर्तमान में आप डांग क्षेत्र में शिक्षा के साथ आप ज्वलंत मुद्दों पर कहानी, दहेज का दंश, फौजिन एवं चीत्कार, वो वीर था शायद कविताओं के साथ-साथ क्षेत्र में सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर समाज के युवाओं का मार्गदर्शन कर रहे है।

श्री हरदयाल योगी

- छाबड़ी, एम.ए. (इतिहास, अंग्रेजी) B.Ed.
- पिता - श्री कंचन लाल
- निवासी - बस स्टेण्ड कैमरी
- जन्म दिनांक - 01/07/1977
- 10वीं - रा.उ.मा.वि. कैमरी से।
- स्नातक - Govt. College Gangapur City, MDS

University Session-2000 with 2nd Rank

- स्नातकोत्तर - History, English Kota University.
- B.Ed. - 2002, Nehru T.T. College Hindaun City.
- वर्तमान कार्य - शिक्षण कार्य
- इतिहास लेखन, पुरातत्व लेखन, कविता लेखन
- रचनाएँ - 1. श्री कृष्ण अवतार बाबा रामदेव, 2. महाभारत का रहस्य एवं 3. पाप का बाप।
- कविताएँ - 1. उर्मिला, 2. बसंत, 3. हिंदी दिवस

श्री हंसराज मास्टर

क्षेत्र में शिक्षा के प्रति जाग्रति लाने वाले सामाजिक और धार्मिक मुद्दों पर विचार अभिव्यक्त करना और युवाओं का मार्गदर्शन करना आपकी शख्सियत की पहचान है। आप वर्तमान में जैमिनी आदर्श सीनियर विद्यालय कैमरी के निदेशक है।

श्री जगदीश धाम कैमरी के परिक्षेत्र में अत्यावश्यक प्रस्तावित आधारभूत कार्य

श्री जगदीश धाम कैमरी में श्री जगदीश भगवान के लक्खी मेले में दिनांक 2 फरवरी, 2025 को श्रीमान भजनलाल शर्मा, माननीय

मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार द्वारा की गई घोषणाओं के क्रियान्वन को लेकर भगवान श्री जगदीश जी के मंदिर के आधारभूत विकास एवं यात्रियों की सुविधाओं हेतु निम्नलिखित कार्य होने आवश्यक है -

1. भगवान श्री जगदीश जी की पैदल परिक्रमा मार्ग

- बस स्टैंड कैमरी, भूतों का पुरा, जगन का पुरा, बाढ़ कैमरी, अड़वाट (नीला खंभ), मेढ़े का पुरा, बेड़े का पुरा, ककला, बीलई, रलावता, खेडला, तेसगाँव, बडागाँव से बस स्टैंड कैमरी (लगभग दूरी 21 किमी)।

2. भगवान श्री जगदीश जी की दंडवत परिक्रमा मार्ग

- जनकपुर, ढण्ड वाला रोड, शमशान घाट, बिजली ग्रेड, पुल की ढाणी, रामफल की ढाणी, भेरोंजी का स्थान (नरभा तालाब की पाल), हनुमान जी मंदिर, कुंजा का पुरा से जनकपुर।

3. कैमरी बस स्टैंड से जनकपुर तक रोड लाईट एवं डीवाईडर सहित दस मीटर रोड़ चौड़ाईकरण (लगभग दूरी 3.0 किमी)
4. बाईपास रोड - कैमरी बस स्टैंड, बिजली ग्रेड, शमशान घाट, राजेश का खेत, ढण्ड वाले रोड से जनकपुर
5. मंदिर चौक के समतलीकरण एवं नवीन टीनसेड के साथ सौंदर्यीकरण (पातड वाले कुआँ पर शिव प्रतिमा फव्वारा

सहित), सर्किल सहित सड़क एवं नाली निर्माण, सार्वजनिक शौचालय (Male/Female -100)

6. भगवान श्री जगदीश जी मंदिर परिसर में बिजली आपूर्ति हेतु 10 km का सौर उर्जा प्लांट

7. यात्री विश्राम गृह/ऑफिस, 25 AC रूम लेट-बाथ सहित, VIP किचिन, डायनिग हॉल।

8. जनकपुर (जानकी जी मंदिर) कैमरी सभा स्थल पर स्टेज निर्माण एवं यात्रियों हेतु स्टेडियम की तर्ज पर चार दीवारी, सीढ़िया, पार्क निर्माण एवं जन सुविधाएँ (शोचालय, बाथरूम Male/Female (100) एवं पेयजल)।

9. भगवान श्री जगदीश जी के मुख्य मार्गों पर प्रवेश द्वार

- बस स्टैंड कैमरी मेढ़े के पुरा के पास
- कुंजा के पुरा के पास ढण्ड के पुरा के पास
- प्रधान का पुरा खेडला भूतों के पुरा (बाड़ा बाजीदपुर)

10. दंडवत यात्रियों की सुविधा हेतु निम्न रोड़ो के सुदृढ़ीकरण एवं पैदल मार्ग निर्माण

- बालाखेडा से कैमरी वाया भीलापाडा, इब्राहिमपुर
- कुंजेला से कैमरी बायाँ बडागाँव, भैराई की ढाणी
- कैमा से कैमरी वाया भूतों का पुरा
- बीलई से कैमरी वाया तेसगाँव, ढण्ड का पुरा

- ल्हावद से कैमरी वाया होदाहेली
- जगन के पुरा से कैमरी
- बाढ़ से कैमरी
- छोटी धमाडी से कैमरी वाया बड़ी धमाडी मेहेते का पुरा
- अड़वाट (नीला खंभ) मेंढे के पुरा से कैमरी
- ककला से कैमरी वाया बेड़े का पुरा, नया तालाब, भेरोंजी का स्थान, ढण्ड का पुरा
- सिकन्दर पुर से कैमरी वाया बाड़ा बाजीदपुर
- बेड़े के पुरा से कैमरी वाया ढण्ड का पुरा एवं तेसगाँव के मेढ़े पर होकर देव बाबा का स्थान ढण्ड का पुरा
- दानापुरा से कैमरी वाया तेसगाँव
- मेंढे का पुरा से कैमरी वाया अडूक्या की कोठी, बोटू का पुरा, खिडकारी, खिन्या का पुरा
- रलावता से कैमरी वाया तेसगाँव

11. बाढ़ रोड तिराया की पुलिया से कॉलेज के बाउंड्री के पास पानी निकासी हेतु नाला निर्माण
12. ग्राम सेवा सहकारी समिति के सामने सर्किल निर्माण
13. जनकपुर शहीद स्मारक के सामने सर्किल
14. मंदिर के पास स्थित RO प्लांट को कॉलेज में शिफ्ट कराना।

15. जनकपुर पर वाहनों हेतु पार्किंग स्थल का जनसुविधाओं सहित निर्माण

16. सूडा बाबा की थाई का विकास

17. प्राचीन गोपाल जी मंदिर का जीर्णोद्धार

18. प्राचीन राधा कुण्ड, गौ कुण्ड एवं बावडी का जीर्णोद्धार

संदर्भ सूची

प्रकाशित मूल : प्रारंभिक स्रोत सामग्री

1. भाटों की वंशावलियाँ एवं बहियाँ
2. जागा की पोथी
3. करौली गजेटियर
4. व्यक्तिगत साक्षात्कार
5. प्रचलित परम्पराएँ

प्रकाशित पुस्तकें

1. भागवत पुराण
2. स्कंध पुराण
3. वेणुगोपाल शर्मा, करौली राज्य का इतिहास, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर 2017
4. खुर्शीद भाटी, गुर्जरों का संपूर्ण इतिहास, जे. के आफसेप प्रेस, दिल्ली 2010
5. डा. सुशील भाटी, लेख गोधन पूजा एवं गोधन गीत
6. वेणुगोपाल शर्मा, करौली के आस्था धाम,निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा
7. डा. रूपसिंह गुर्जर, लेख रण नृत्य
8. जगदीश धाम देववाणी गुर्जर पत्रिका
9. संजीवनी टूडे पत्रिका - धर्मवीर खटाना बडा गाँव कैमरी
10. Official site of Karauli www.Karauli.rajasthan.govt.in

11. मोरध्वज (गढ़मोरा) वर्णन

- अलेक्जेंडर कनिंघम (1884) : 1881-82 में मध्य प्रान्त और निचले गंगा दो आब में दौरे की रिपोर्ट पृष्ठ सं. 74.
- अमर उजाला रिपोर्ट 22 अगस्त 2019 (सिरोही डिंपल)
- ''यहाँ चिल्लाया था अर्जुन का अभिमान, श्री कृष्ण ने ली थी राजा मोरध्वज की परीक्षा''।
- माथुर (2006) ''कुचामनी ख्याल राजस्थान की लुप्तप्राय लोक नाट्य शैली'' पृष्ठ सं. 19, 62.
- युवराज (23 अगस्त 2019) यहाँ भगवान कृष्ण ने ली थी मोरध्वज की परीक्षा। ''अर्जुन का घमण्ड''
- वेणुगोपाल शर्मा ''करौली के आस्था धाम'' निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर्स, आगरा संस्कृत ग्रंथ
  (अ) कथा सरित्सागर
  (ब) अहिर्बुध्य संहिता।

12. जाम्बान गुफा (कीजर की गुफा) : मोरड़ा के पहाड़ (बालघाट)

- श्री कृष्ण-जामवंत युद्ध, जामवती विवाह
- श्रीमद् भागवत पुराण-दशम स्कंध पृष्ठ सं. 626, 627.
- प्राचीन देवताओं का विश्व कोष - मैकफोरलैण्ड (06 दिसम्बर, 2021), ISBN-9780786491797
- पेट्रीशिया टर्नर, चार्ल्स रसेल कूलटर ''प्राचीन देवताओं का शब्दकोष'' 2001, पृष्ठ सं. 248.

- मेग्नोटी एंजेला ''जाम्बान कृष्ण से लड़ता हैं।'' (स्यामन्तक मणि कथा भाग-5)
- www.wisdommlib.org जाम्बान की कहानी- 02 अक्टूबर 2022.
- मोटीलाल बनारसीदास-मणिवेट्टम
- महाभारत, भागवतपुराण, विष्णु पुराण।

13. श्री कृष्ण का संदीपन ऋषि आश्रम गमन
- श्रीमद्भागवत दशम स्कंध - 45वां अध्याय पृष्ठ सं. 687 (श्री कृष्ण-बलराम काय यज्ञोपवीत और कुल प्रवेश)
- विष्णु पुराण, स्कंध पुराण, महाभारत, ब्रह्म पुराण, अग्नि पुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण।
- www.wisdom.org 07.11.2022 ''संदीपन''
- www.wisdom.org 07.11.2022 Krishna Brings Back His Preceptor's son From the Ocean. (Chapter-33).

धन्यवाद...।

नामावली मन्दिर ट्रस्ट श्री जगदीश धाम कैमरी

नाम	गाँव	पद
श्री घनश्याम खटाना	खेड़ला	अध्यक्ष
श्री कैप्टन राजाराम गुर्जर	होदा हेली	उपाध्यक्ष
श्री कैप्टन शीशराम खटाना	बादाबाजीदपुर	कोषाध्यक्ष
श्री रामविलास गुर्जर	बड़ी धमाड़ी	सचिव

सदस्यगण

श्री शीशराम खटाना, पुल की ढाणी

श्री मुरारी लाल नेता, बाड़ा बाजीदपुर

श्री दयाराम खटाना, जिन्दोंकापुरा

श्री कलुआ पटैल, तैसगाँव

श्री बनवारी पटेल, तैसगाँव

श्री पृथ्वी सिंह, खेड़ला

श्री सुबेदार हनुमान सहाय, बडागाँव

श्री हवलदार राजबहादुर, बडागाँव

श्री समय सिंह, पुल की ढाणी

श्री सीयाराम वकील, इब्राहिमपुर

श्री हंसराज सरपंच, जिन्दोंकापुरा

श्री कैप्टन नादान सिंह खटाना, बाड़ा बाजीदपुर

श्री चिरंजी लाल गुर्जर, रलावता

श्री रामदयाल पटेल, रलावता

श्री रूप सिंह सैनी, कैमरी

श्री सुबे साहब सिंह गुर्जर, महतेकापुरा

श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, कैमरी

श्री जय सिंह अध्यापक, जिन्दोंकापुरा

श्री प्यार सिंह गुर्जर, खिन्याकापुरा

श्री दयाराम वकील, बालाखेड़ा

श्री भूर सिंह गुर्जर, डूगांपुरा

श्री साहब सिंह, बाढ़ कैमरी

श्री राम हरि पू.स., चंदवाड़

श्री हवलदार गोविन्द सिंह, बाढ़ कैमरी

श्री भँवर सिंह, मेढेकापुरा

श्री भगवान सिंह, भैरोंजी की ढ़ाणी

श्री सुगर सिंह, ककड़ा

श्री हरसहाय, खेड़ली

श्री ज्ञान सिंह, काला डबरा

श्री रामस्वरूप गुर्जर, बीलई

श्री गोपाल प्रसाद शर्मा, तेसगाँव

श्री कैलाश प्रसाद शर्मा, तेसगाँव

श्री रामदयाल ठेकेदार, खेड़ली

श्री भूर सिंह, बड़ी धमाड़ी

श्री शेर सिंह, इब्राहिमपुर